दमण से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

Asli Azadi Dainik @AsliAzadiDainik asliazadidainikofficial

असली आज़ादी

■ वर्षः 21, अंकः 316 ■ दमण, रविवार 06, सितंबर 2026 ■ पृष्ठः 8 ■ मूल्यः 2 रु ■ RNI NO-DDHIN/2005/16215 ■ संपादक- विजय जगदीशचंद्र भट्ट

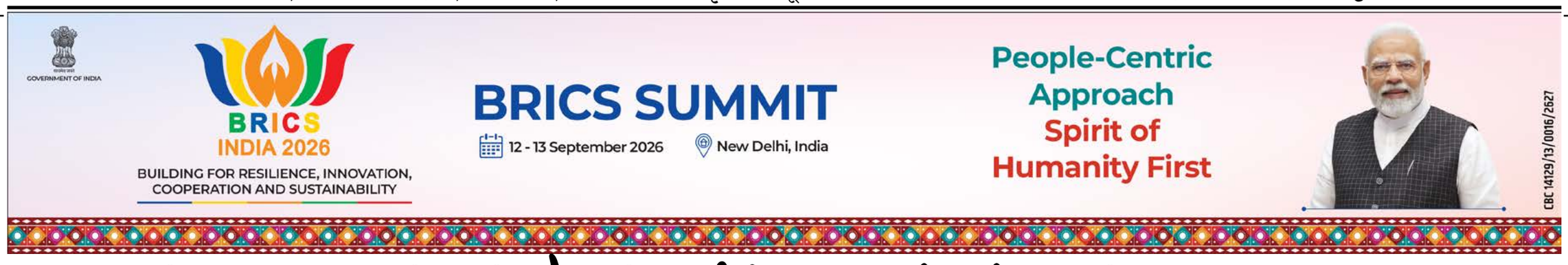

भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने शिक्षकों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए

■ देश के विकास में शैक्षणिक उत्कृष्टता, कौशल विकास और उद्यमिता का बहुत महत्व है: राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ■ संघ प्रदेश दादरा नगर हवेली और दमण-दीव की प्राथमिक शिक्षिका पूर्णिमा मोहनलाल पटेल को मिला राष्ट्रीय श्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार : संघ प्रदेश श्रीडी का बढाया गौरव

नई दिल्ली (पीआईबी)। भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु ने आज 5 सितंबर 2026 को शिक्षक दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में आयोजित एक समारोह में देशभर के शिक्षकों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए। इस दौरान स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के 48 शिक्षकों, उच्च शिक्षा संस्थानों एवं पॉलिटेक्निक के 21 शिक्षक/फैकल्टी और कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय के 13 स्कील ट्रेनर्स को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार प्रदान किया गया। इस अवसर पर अपने संबोधन में राष्ट्रपति ने कहा कि शिक्षा हमारे संविधान में निहित, 'अवसर की समानता' के आदर्श को कार्यरूप देने का सबसे प्रभावी माध्यम है। उन्होंने कहा कि प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ाई बीच में छोड़ने की दर के नगण्य हो जाने की उपलब्धि शिक्षकों के प्रयासों से हासिल हो सकी है। उन्होंने इस राष्ट्रीय सफलता के लिए सभी शिक्षकों की सराहना की। राष्ट्रपति ने कहा कि स्कूली शिक्षा, शिक्षा व्यवस्था का आधार है। ज्ञान और कौशल तो कभी भी प्राप्त किए जा सकते हैं, परंतु बचपन में ही सदाचार की शिक्षा देना, अधिक प्रभावी सिद्ध होता है। प्रारंभिक कक्षाओं में बच्चों के बौद्धिक, शारीरिक और नैतिक विकास पर निष्ठापूर्वक ध्यान देकर हमारे शिक्षक, अच्छे विद्यार्थियों और कर्तव्यनिष्ठ नागरिकों की भावी पीढ़ियां तैयार कर सकते हैं। राष्ट्रपति ने इस बात का उल्लेख किया कि अनेक विद्यार्थी, आर्थिक दृष्टि से कमजोर परिवारों से आते हैं, कुछ अपने परिवार में पहली पीढ़ी के विद्यार्थी होते हैं, कुछ विद्यार्थी गांव के किसी सामान्य स्कूल से शहर के बड़े स्कूल में आते हैं, कुछ विद्यार्थी स्वभाव से ही संकोची होते हैं, कुछ विद्यार्थियों में बहुत प्रतिभा होती है लेकिन उनमें आत्मविश्वास की कमी होती है, तथा कुछ विद्यार्थी ऐसे होते हैं जिनकी विशेष जरूरतें होती हैं। ऐसे सभी विद्यार्थी, जो किसी कारण से, कोई कमी महसूस करते हैं, उनमें आत्मविश्वास जगाना, और उन्हें आगे बढ़ाना, शिक्षकों का विशेष दायित्व है। राष्ट्रपति ने कहा कि देश के विकास में शैक्षणिक उत्कृष्टता, कौशल विकास और उद्यमिता का बहुत महत्व है। भारत को ज्ञान की महाशक्ति बनाने के साथ-साथ विश्व के कौशल-केन्द्र के रूप में स्थापित करना, हमारी राष्ट्रीय प्राथमिकताओं में शामिल है। राष्ट्रपति ने कहा कि हम सभी देशवासी, विकसित भारत के निर्माण के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहे हैं। विश्वस्तरीय शिक्षा व्यवस्था के बल पर ही, विकसित राष्ट्र का निर्माण संभव है। हमारे शिक्षक, शिक्षा व्यवस्था में प्राण-वायु का संचार करते हैं। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हमारे देश में एक भी विद्यार्थी, अच्छी शिक्षा के अवसरों से वंचित न रहे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हमारे शिक्षक, अपने स्नेह और समर्पण से, सभी विद्यार्थियों में ज्ञान, प्रेरणा, नैतिकता और संवेदनशीलता का संचार करें।

दमण की प्राथमिक शिक्षिका पूर्णिमा मोहनलाल पटेल राष्ट्रपति अवार्ड से हुई सम्मानित

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 05 सितंबर। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिन को पूरे भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत देश के प्राथमिक/उच्च प्राथमिक/ माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक शिक्षकों द्वारा किए गए श्रेष्ठ कार्यों के लिए हर साल राष्ट्रपति के हाथों नगद पुरस्कार, मेडल एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया जाता है। इस साल संघ प्रदेश दादरा नगर हवेली और दमण और दीव से स्टेट सिलेक्शन कमेटी ने प्राथमिक शिक्षिका पूर्णिमा मोहनलाल पटेल का नेशनल लेवल सिलेक्शन प्रोसेस के लिए चयन किया गया था। जिसके बाद नेशनल इंडिपेन्डेन्ट ज्यूरी कमेटी के समक्ष अपनी उपलब्धि का प्रस्तुतिकरण दिया गया था। पूरे भारत देश के सभी राज्य/ संघ प्रदेशों से चयनित 152 शिक्षकों ने नेशनल इंडिपेन्डेन्ट ज्यूरी कमेटी के समक्ष अपनी-अपनी उपलब्धि एवं श्रेष्ठ कार्यों का प्रस्तुतिकरण दिया था। जिसमें से 48 श्रेष्ठ शिक्षकों को राष्ट्रपति अवार्ड के लिए चयनित किया गया। 04/09/2026 को इन सभी 48 श्रेष्ठ शिक्षकों के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ प्रधानमंत्री आवास पर मिटींग आयोजित की गयी थी। इस वर्ष कुल 82 शिक्षकों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 05 सितंबर को विज्ञान भवन दिल्ली में आयोजित अवार्ड कार्यक्रम में भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मूजी के हाथों सभी श्रेष्ठ शिक्षकों का सम्मान किया गया। दमण की प्राथमिक शिक्षिका पूर्णिमा मोहनलाल पटेल राष्ट्रपति अवार्ड से सम्मानित हुई। दमण की प्राथमिक शिक्षिका पूर्णिमा मोहनलाल पटेल वर्ष 2007 से शिक्षा के क्षेत्र में श्रेष्ठ योगदान दे रही है। अपनी विद्यालय में छात्रों की रूचि और क्षमता के अनुरूप आनंदमय शिक्षा प्रदान करने, ड्रॉपआउट और अनियमित बच्चों को नियमित करने, स्कूल लेवल विज्ञान प्रदर्शनी, खेल आधारित शिक्षा, नवाचार, (समाचार का शेष पेज 2 पर)

पीएम मोदी ने राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार विजेताओं से बातचीत की

■ प्रधानमंत्री ने शिक्षकों से युवा छात्रों में नशीली दवाओं की लत की समस्या के प्रति सतर्क रहने और उन्हें इससे उबरने में मदद करने का आग्रह किया ■ प्रधानमंत्री ने बच्चों के अत्यधिक स्क्रीन टाइम को खेलकूद, शारीरिक गतिविधियों और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से कम करने का आह्वान किया ■ प्रधानमंत्री श्री मोदी ने शिक्षकों से बचपन को सुरक्षित रखने और बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा को बढ़ाने का आग्रह किया ■ शिक्षकों ने कक्षा शिक्षण को अधिक आकर्षक और प्रभावी बनाने के लिए अपनाए गए रचनात्मक तरीकों को साझा किया

नई दिल्ली (पीआईबी)। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कल लोक कल्याण मार्ग स्थित अपने आवास पर राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार विजेताओं से बातचीत की। इस वर्ष, तीन विभागों से 82 शिक्षकों और शिक्षाविदों को राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार के लिए चुना गया है। इनमें विद्यालय शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के 48 शिक्षक, उच्च शिक्षण संस्थानों और पॉलिटेक्निक के 21 शिक्षक/संकाय सदस्य और कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के 13 कौशल प्रशिक्षक शामिल हैं। पुरस्कार विजेताओं ने अपने शिक्षण अनुभवों और नवाचारों के बारे में बताया। उन्होंने कक्षा शिक्षण को अधिक रुचिकर और प्रभावी बनाने के लिए अपनाए गए कई रचनात्मक तरीकों को साझा किया। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षकों को बच्चों के शैक्षणिक प्रदर्शन से परे जाकर उनके व्यवहार और दैनिक जीवन पर भी ध्यान देना चाहिए। उन्होंने पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था में कमी के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि बच्चों के जीवन में शिक्षकों की भूमिका और भी महत्वपूर्ण होती जा रही है। प्रधानमंत्री ने नशे की समस्या के बारे में चर्चा करते हुए शिक्षकों से बच्चों में होने वाले बदलावों के प्रति सतर्क रहने, इसके कारणों का पता लगाने और ऐसे बच्चों को इस लत से उबरने में मदद करने का आह्वान किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि बचपन की मासूमियत को सुरक्षित रखना एक महत्वपूर्ण भूमिका है और शिक्षक यह भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों में एक समान मूल स्वभाव और जिज्ञासा होती है और यदि शिक्षक इस जिज्ञासा को बढ़ावा और उचित दिशा दें, तो वे उनके विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। उन्होंने स्क्रीन टाइम की समस्या के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि यह एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है। उन्होंने शिक्षकों से आग्रह किया कि वे अभिभावकों से इस बारे में बात करें कि उनके बच्चे स्क्रीन पर कितना समय बिताते हैं और क्या वे देर रात तक मोबाइल फोन का उपयोग करते रहते हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि बच्चे खेलकूद, शारीरिक गतिविधियों और रचनात्मक गतिविधियों में रुचि विकसित करके धीरे-धीरे स्क्रीन के अत्यधिक उपयोग से बाहर निकल सकते हैं। प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बारे में चर्चा करते हुए बच्चों को कक्षा से बाहर ले जाकर उन्हें वास्तविक दुनिया के कौशल और कार्य के विभिन्न रूपों से जोड़ने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने शिक्षकों से यह भी आग्रह किया कि वे केवल पाठ्यक्रम का ज्ञान प्रदान करने तक ही सीमित न रहें, बल्कि बच्चों में श्रम की गरिमा जैसे मूल्यों को भी विकसित करने में सहयोग करें।

ओडिशा में बाढ़ का कहर थमा, 2 लाख लोग अब भी प्रभावित

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा में विनाशकारी बाढ़ से राहत की खबर है। शुक्रवार को राज्य में बाढ़ की स्थिति में व्यापक सुधार देखा गया, जहां सभी प्रमुख नदियों का जलस्तर तेजी से घट रहा है। हालांकि, बालासोर और जाजपुर जिलों के 303 गांवों में लगभग दो लाख लोग अब भी बाढ़ से प्रभावित हैं। सामान्य जनजीवन पटरी पर लाने के लिए युद्धस्तर पर राहत और बचाव अभियान जारी हैं। राजस्व विभाग के अनुसार, बालासोर जिले के 241 गांवों में 1,90,974 लोग और जाजपुर जिले के 62 गांवों में 7,745 लोग अभी भी बाढ़ की चपेट में हैं। मयूरभंज, क्योंझर, केंद्रापड़ा और भद्रक समेत अन्य जिलों में भी नावों के जरिए राहत सामग्री पहुंचाई जा रही है। ओडिशा आपदा त्वरित कार्रवाई बल (ओडीआरएएफ), राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) और अग्निशमन सेवा की कुल 28 टीमें तैनात हैं। बालासोर में 111 और जाजपुर में 22 राहत शिविर संचालित हैं, जहां बालासोर से 16,582 लोगों को सुरक्षित पहुंचाया गया है। जल संसाधन विभाग ने पुष्टि की कि किसी भी प्रमुख नदी में अब बाढ़ की स्थिति नहीं है; सुवर्णरेखा नदी भी खतरे के निशान से नीचे बह रही है। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने 8 सितंबर तक ओडिशा के लिए कोई विशेष बारिश की चेतावनी जारी नहीं की है।

मुंबई एचसी का बड़ा आदेश : सीवर में मौत पर 30 लाख मुआवजा दे सरकार

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई उच्च न्यायालय ने सिर पर मैला ढोने की अमानवीय प्रथा पर महाराष्ट्र सरकार की एक नीति रद्द करते हुए कड़ा रुख अपनाया है। अदालत ने खतरनाक सफाई कार्य में मारे गए श्रमिकों के परिजनों को मुआवजा देने की जिम्मेदारी निजी नियोक्ताओं पर डालने वाली नीति को असंवैधानिक करार दिया। न्यायमूर्ति भारती डांगरे और मंजुषा देशपांडे की खंडपीठ ने राज्य सरकार को ऐसे मृत श्रमिकों के आश्रितों को तत्काल 30 लाख रुपये का मुआवजा देने का निर्देश दिया। सरकार बाद में यह राशि संबंधित निजी संस्थाओं से वसूल सकती है। न्यायालय ने राज्य को छह महीने के भीतर खतरनाक सफाई कार्य (2013 अधिनियम के तहत परिभाषित) के दौरान मरने वाले सभी लोगों की पहचान करने का भी निर्देश दिया है।अदालत ने गंभीर टिप्पणी करते हुए कहा, हम चंद्रमा तक पहुंचने का दावा करते हैं, लेकिन हमारे देश में जाति व्यवस्था का सामाजिक कलंक अब भी कायम है, जो कुछ नागरिकों को मानवीय गरिमा से नीचे का काम करने को मजबूर करता है। न्यायालय ने अफसोस जताया कि संविधान अपनाने के 75 साल बाद भी देश इस सामाजिक बुराई से मुक्त नहीं हो पाया है।

बडगाम में छिपे हैं 2 आतंकी, सूचना मिलते ही सुरक्षाबलों ने घेरा इलाका

जम्मू (एजेंसी)। बडगाम के यूसमर्ग क्षेत्र में 2 आतंकियों के छिपे होने की आशंका है। जानकारी के मुताबिक सुरक्षाबलों को आतंकियों के छिपे होने की सूचना मिली थी जिसके बाद मौके पर पहुंचकर सुरक्षाबलों ने तलाशी अभियान चलाया। इसी दौरान आतंकियों और सुरक्षाबलों में मुठभेड़ शुरू हो गई और दोनों ओर से गोलीबारी हुई। इसके बाद सुरक्षाबलों ने इलाके को पूरी तरह से घेर लिया और सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया। जानकारी के अनुसार यूसमर्ग क्षेत्र में 2 आतंकियों के छिपे होने की आशंका जताई जा रही है कि दोनों आतंकी पाकिस्तान से संबंधित हैं। फिलहाल सुरक्षाबल मौके पर मौजूद हैं और अलर्ट पर हैं। पूरे क्षेत्र को घेर लिया गया है और सर्च ऑपरेशन जारी है।

बेंगलुरु में कर्ज न चुकाने पर महिला का निर्वस्त्र वीडियो बनाया

बेंगलुरु(एजेंसी)। कर्ज और ब्याज न चुकाने के विवाद को लेकर बेंगलुरु में एक महिला के साथ हैवानियत का बेहद चौंकाने वाला और दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है। घटना के विवरण सुनकर किसी की भी रूह कांप सकती है। पुलिस के अनुसार, पीड़ित महिला ने लगभग दो साल पहले रेशमा बानू से एक लाख रुपये उधार लिए थे, और बाद में रेशमा के जरिए नाजत नामक व्यक्ति से पचास हजार रुपये और लिए। शुरुआत में महिला नियमित रूप से किस्त और ब्याज का भुगतान करती रही, लेकिन उसकी आर्थिक स्थिति खराब होने के बाद यह भुगतान रुक गया। बताया गया है कि करीब छह महीने से ब्याज नहीं दिया गया था, और पिछले दो महीने से किस्त भी नहीं चुकाई गई थी। जब महिला ने रेशमा का नंबर ब्लॉक कर दिया और अपनी मां के घर चली गई, तो मामले ने एक खतरनाक और आपराधिक मोड़ ले लिया। आरोप है कि महिला को काम दिलाने के बहाने एक विशेष स्थान पर बुलाया गया, जहाँ पहले से ही रेशमा बानू, उसका पति सुहैल और नाजत मौजूद थे। पुलिस के दावे के अनुसार, वहाँ महिला के साथ बेरहमी से मारपीट की गई और उस पर कथित तौर पर चाकू से भी हमला किया गया। इसके बाद, उसे जबरन एक ऑटो रिक्शा में बैठाया गया और कुंबलगोडु के पास एक घर में ले जाया गया। वहाँ उसे कथित तौर पर बंधक बनाकर रखा गया और उसके साथ फिर से मारपीट की गई। मामले का सबसे वीभत्स और जघन्य पहलू यह है कि महिला को निर्वस्त्र कर उसका वीडियो बनाया गया और उसे धमकाया गया कि यदि उसने कर्ज की रकम और ब्याज नहीं चुकाया तो उस वीडियो को वायरल कर दिया जाएगा। इस जघन्य घटना का खुलासा तब हुआ जब महिला अचानक लापता हो गई।

पेंग्विन इंडिया की आनाकानी और बहानेबाजी के पीछे सत्ता का खौफ

-सोनिया गांधी की किताब के प्रकाशन पर पूर्व सीएम गहलोत ने केंद्र पर साधा निशाना

जयपुर, एजेंसी।
कांग्रेस की वरिष्ठ नेता और राज्यसभा सांसद सोनिया गांधी के संस्मरण (मेमॉयर) बिलॉन्गिंग- ए जर्नी ऑफ लव के प्रकाशन को लेकर सियासी घमासान तेज हो गया है। राजस्थान के पूर्व सीएम अशोक गहलोत ने शुक्रवार को प्रकाशक पेंग्विन इंडिया के पीछे हटने को लेकर सीधे तौर पर केंद्र सरकार और पीएमओ को कठघरे में खड़ा किया। गहलोत ने दो टूक कहा कि प्रकाशक की आनाकानी और बहानेबाजी के पीछे सत्ता का खौफ है, लेकिन दुनिया की कोई भी ताकत इस सच को सामने आने से नहीं रोक सकती है। उन्होंने विश्वास जताया कि तय तारीख यानी 10 नवंबर 2026 को ही यह पुस्तक दुनिया के सामने आएगी। दुनिया में छप सकती है तो भारत में क्यों नहीं? पेंग्विन की खुली पोल अशोक गहलोत ने प्रकाशक की भूमिका और सरकारी हस्तक्षेप पर सवाल उठाते हुए कहा।

गहलोत ने कहा कि पेंग्विन की मूल अंतरराष्ट्रीय संस्था इस किताब को मूल स्वरूप में पूरे विश्व में प्रकाशित करने को तैयार है। जब दुनिया भर के पाठक इसे पढ़ सकते हैं, तो भारत के पाठकों से इसे क्यों छिपाया जा रहा है? इस विरोधाभास ने पेंग्विन इंडिया की पूरी पोल खोलकर रख दी है। पूर्व सीएम ने तर्क दिया कि पीएमओ और सरकार पर लगातार गंभीर आरोप लग रहे हैं कि वे पीएम मोदी, आरएसएस और चीन से जुड़े अंशों को हटाने का दबाव बना रहे थे। इसके बावजूद सरकार की ओर से एक शब्द का भी खंडन न आना यह साबित करता है कि मौन रहकर इन आरोपों को स्वीकार कर लिया गया है।

सोनिया गांधी की राजनीतिक विरासत का उल्लेख करते हुए गहलोत ने कहा कि वे कोई सामान्य हस्ती नहीं हैं। वे देश की नेता प्रतिपक्ष रही हैं और 22 सालों से ज्यादा समय तक कांग्रेस की अध्यक्ष रहकर उन्होंने भारतीय राजनीति को दिशा दी है। उनके लंबे सार्वजनिक जीवन और अनुभवों को सेंसर करने का प्रयास अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर सीधा प्रहार है। गहलोत ने खुलासा किया कि जैसे ही यह बात सार्वजनिक हुई कि पेंग्विन इंडिया ने पांडुलिपि छापने से हाथ पीछे खींच लिए हैं, देश-दुनिया के कई प्रतिष्ठित प्रकाशन संस्थानों ने इसे छापने के लिए हाथ आगे बढ़ा दिए हैं। गहलोत ने पूर्ण विश्वास जताया कि नया प्रकाशक सामने आएगा, किताब अपने तय मानकों के साथ छपेगी और घोषित तिथि 10 नवंबर को ही इसका विमोचन होगा।

आए दिन मस्जिदों को अवैध बताकर उनको ध्वस्त करना ठीक नहीं : मायावती

लखनऊ (एजेंसी)। सहारनपुर कलेक्ट्रेट में बनी मस्जिद को भारी संख्या में तैनात पुलिस बल की मौजूदगी में ध्वस्त कर दिया गया। यह कार्रवाई जिला अदालत के फैसले के बाद की गई है। वहीं कैराना की सांसद इकरा हसन को उनके घर पर पुलिस ने नजरबंद कर दिया है। इस घटनाक्रम पर बसपा सुप्रीमो मायावती ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने एक्स पर लिखा- ज़िला सहारनपुर की मस्जिद समेत पूरे उत्तर प्रदेश में आए दिन मस्जिदों को काफी आपाधापी में अवैध बताकर उनको ध्वस्त करने का जो सरकारी अभियान चलाया जा रहा है वह ठीक नहीं है और सरकार को ऐसे निगेटिव हालात से बचने के लिए इस पर तुरन्त रोक लगाकर इसके समाधान के उपाय करने चाहिए।
उन्होंने कहा कि वैसे भी एक संवैधानिक सेक्युलर सरकार द्वारा सभी धर्मों के मानने वालों एवं उनके धार्मिक स्थलों आदि का समान आदर-सम्मान और उनकी सुरक्षा करने का उत्तरदायित्व होता है। इस्लाम मज़हब में मस्जिदें हर दिन इबादत बल्कि दिन में कई बार जमात के साथ नमाज़ पढ़ने का मुख्य और अभिन्न अंग हैं, जिसको ध्यान में रखकर व भारतीय परम्परा के मुताबिक सम्मान देना देश व व्यापक जनहित में ज़रूरी है। इसके साथ ही, बिना नियम-क़ानून का समुचित अनुपालन किए किसी भी अभियुक्त का मकान ध्वस्त करके उसके पूरे परिवार को सामूहिक तौर पर सजा देकर बेघर कर देने की कार्रवाईयों से भी लोग काफी विचलित हैं। ऐसे में बसपा सरकार की तरह का 'क़ानून द्वारा क़ानून का राज' का व्यवहार ज़रूरी है।

दिल्ली-एनसीआर में बारिश जारी, मौसम विभाग ने जारी किया येलो अलर्ट

-एयरपोर्ट पर पानी भर जाने से उड़ानों का संचालन प्रभावित, यात्री हुए परेशान

नई दिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली और एनसीआर में शनिवार को लगातार दूसरे दिन मूसलाधार बारिश का हो रही है। इससे जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ और भारत मौसम विज्ञान विभाग ने पूरे दिल्ली-एनसीआर के लिए येलो अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग ने शनिवार दिन भर गरज के साथ भारी बारिश का अनुमान जताया है। मौसम विभाग का कहना है कि रविवार को मौसम में सुधार होने की संभावना है और 8 सितंबर तक इस इलाके में मौसम सूखा रहेगा।
शुक्रवार को दिल्ली में भारी बारिश हुई, जिससे कई इलाकों में जलभराव हो गया और ट्रैफिक व्यवस्था बाधित हुई। दिल्ली और गुरुग्राम के कई हिस्सों में खासकर कनॉट प्लेस, लुटियंस दिल्ली, साइबर सिटी कमर्शियल हब, शंकर चौक और शीतला माता रोड जैसी प्रमुख जगहों पर ट्रैफिक जाम रहा। इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर पानी भर जाने से उड़ानों का संचालन प्रभावित हुआ, जिससे कई यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा।
दिल्ली एयरपोर्ट ने कहा कि भारी बारिश हुई, जिसके कारण अप्रोच रोड और फोरकोर्ट वाले इलाकों में पानी जमा हो गया। जमा पानी को कुछ समय में हटा दिया गया। खराब मौसम का असर उड़ानों के संचालन पर भी पड़ा, जिससे कुछ उड़ानें देरी से चलीं और कुछ को डायवर्ट करना पड़ा। बारिश के बाद दिल्ली में वायु गुणवत्ता सूचकांक में भी सुधार हुआ। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मुताबिक शुक्रवार को एक्यूआई 71 दर्ज किया गया। जो संतोषजनक श्रेणी में आता है।

छात्रों पर लाठीचार्ज गलत: सुप्रीम कोर्ट ने पुलिस को नसीहत

नई दिल्ली, एजेंसी।
दिल्ली के जंतर-मंतर पर एक विरोध प्रदर्शन के दौरान जुटे युवाओं पर पुलिस की कार्रवाई को लेकर सुप्रीम कोर्ट के एक न्यायाधीश ने गहरी निराशा व्यक्त की है। न्यायाधीश उज्जल भुइयां ने पुलिस द्वारा किया गया लाठीचार्ज को बेहद परेशान करने वाली घटना करार दिया। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि यदि छात्र अपने अलग विचार रखते हैं, तो उनके खिलाफ दंडात्मक रवैया नहीं अपनाया जाना चाहिए। न्यायमूर्ति भुइयां ने इस बात पर जोर दिया कि प्रदर्शन कर रहे लोगों पर इस तरह से अत्याचार करना बहुत ही निराशाजनक है और यह एक सभ्य समाज में अस्वीकार्य है। उन्होंने गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि पुलिस अधिकारियों से जिस निष्पक्षता की उम्मीद की जाती है, वह पूरी तरह से गायब नजर आ रही है।
न्यायाधीश भुइयां ने पुलिस को आम लोगों का भरोसा बनाए रखने की नसीहत देते हुए कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने संज्ञान लिया है कि जिन पीड़ितों के मानवाधिकार का उल्लंघन किया गया है, उन्हें उसका

मुआवजा दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि पुलिस को चाहिए कि वह बिना ज्यादा बल प्रयोग किए कानून व्यवस्था बनाए रखे। उन्होंने आगे कहा कि आम लोगों के लिए एक वर्दीधारी पुलिस वाले की पहचान सरकार से प्राप्त ताकत और अधिकारों के रूप में होती है। यदि किसी को कोई परेशानी होती है, तो वह पुलिस से मदद मांगता है। ऐसे में यह बहुत जरूरी है कि पुलिस अपनी विश्वसनीयता बनाए रखे, जिससे लोग उस पर भरोसा कर सकें और न्याय की उम्मीद कर सकें।
न्यायाधीश भुइयां ने आगाह किया कि जब सरकार के अधिकारी ही कानून तोड़ने वाले बन जाते हैं, तो इससे अराजकता को बढ़ावा मिल सकता है। उन्होंने कहा कि यदि सरकार के अधिकारी ही कानून तोड़ने लगें, तो इससे कानून के प्रति अनादर पैदा होगा और समाज में अव्यवस्था फैलेगी। कोई भी सभ्य देश ऐसी स्थिति को स्वीकार नहीं कर सकता, जहां कानून के रक्षक ही उसका उल्लंघन करने लगें। न्यायाधीश भुइयां ये महत्वपूर्ण टिप्पणियां पूर्व सचिव (सुरक्षा) यशोवर्धन आजाद की लिखी पुस्तक के विमोचन समारोह में बोल रहे थे, जो राजधानी के वायसराय हॉल में आयोजित किया गया था। उन्होंने कहा, जब हम इंडियन पुलिस सर्विस के युवा अधिकारियों को खुद जाकर प्रदर्शनकारियों और प्रदर्शन करने वालों के साथ मारपीट करते देखते हैं, तो हम सभी को निराशा होती है। यह पहली बार नहीं है जब न्यायपालिका ने छात्रों के अधिकारों और पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए हैं। छात्रों के विचारों को लेकर मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने भी खुलकर कहा था कि उन्हें किसी भी बात का विरोध करने का पूरा अधिकार है। जब भारतीय बार काउंसिल (बीसीआई) ने हैदराबाद के एक लॉ इंस्टीट्यूट के छात्रों के रजिस्ट्रेशन को बैन करने की बात कही, तो मुख्य न्यायाधीश ने फटकार लगाते हुए कहा था कि छात्रों और उनके विचारों के बीच किसी को नहीं आना चाहिए। ये न्यायिक टिप्पणियां लोकतंत्र में विरोध के अधिकार और पुलिस की जवाबदेही के महत्व को रेखांकित करती हैं।

जिला स्तरीय रंगोत्सव में विद्यार्थियों ने बिखेरे कला एवं संस्कृति के रंग

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, सिलवासा, 03 सितंबर। संघ प्रदेश दादरा नगर हवेली और दमण-दीव के शिक्षा विभाग एवं समग्र शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में निहित कला, संस्कृति एवं रचनात्मक प्रतिभाओं को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से जिला स्तरीय रंगोत्सव कार्यक्रम का भव्य आयोजन डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम ऑडिटोरियम हॉल डोकमर्डी में किया गया। इस अवसर पर संघ प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से आए विद्यार्थियों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुतियों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। रंगोत्सव कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को लोकनृत्य, नाटक, कथा-कथन, नृत्य, लोकगीत एवं कहानी सुनाने जैसी विभिन्न कला विधाओं में अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में कुल पाँच विषयों पर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इनमें अमृत काल का भारत, स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत, उड़ान-सपनों को पंख, युवा धन-विकसित भारत का उज्ज्वल भविष्य तथा भारत की संस्कृति-

विविधता में एकता विषय शामिल थे। इन पाँचों विषयों पर प्रदेश के कुल 22 क्लस्टरों द्वारा विभिन्न कला विधाओं में 22 उत्कृष्ट प्रस्तुतियां दी गईं। प्रतियोगिता के परिणामों में उड़ान-सपनों को पंख थीम में पीएस उमरकुई फलांडी क्लस्टर ने प्रथम तथा सीपीएस सिलवासा गुजराती माध्यम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। अमृत काल का भारत थीम में सीपीएस नरोली गुजराती माध्यम प्रथम तथा सीपीएस करचौंड द्वितीय स्थान पर रहा। इसी प्रकार भारत की संस्कृति-विविधता में एकता थीम में सीपीएस नरोली अंग्रेजी माध्यम ने प्रथम एवं सीपीएस खरड़पाड़ा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत थीम में पीएस खोरीपाड़ा प्रथम एवं पीएस गोराटपाड़ा द्वितीय स्थान पर रहा। वहीं युवा धन-विकसित भारत का उज्ज्वल भविष्य थीम में पीएस कपारियापाड़ा ने प्रथम तथा सीपीएस सिलवासा एमएम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सहायक राज्य परियोजना निदेशक परितोष शुक्ला ने कहा कि आज अपनी कला का प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थी भविष्य में हमारी समृद्ध कला एवं संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के मंच विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को बढ़ाने के साथ-साथ उनकी प्रतिभा को निखारने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। रंगोत्सव जैसे कार्यक्रमों से प्राप्त अनुभव भविष्य में विद्यार्थियों को कला उत्सव एवं अन्य सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करेंगे। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों की विद्यालयों से आए विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत की गई उत्कृष्ट एवं प्रभावशाली प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए कहा कि ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों में अपार प्रतिभा छिपी हुई है। सभी शिक्षकों से आग्रह किया गया कि वे विद्यालय स्तर पर प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी प्रतिभा को पहचानने एवं उसे प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करें। जिला स्तरीय रंगोत्सव कार्यक्रम शिक्षा सचिव अरुण टी. एवं शिक्षा निदेशक मेडम महिमा तोमर के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सहायक शिक्षा निदेशक परितोष शुक्ला, सहायक शिक्षा निदेशक (एचओ) दिलावर मंसूरी, एएसपीडी डॉ. सतीश पटेल, शिक्षा अधिकारी राजेंद्र मोहिले, जिला पंचायत शिक्षा अधिकारी दौलतसिंह सोलंकी एवं बीआरसी ए. एस. वोहरा तथा मनोज पटेल का विशेष सहयोग एवं मार्गदर्शन रहा। समग्र शिक्षा विभाग के सभी बीआरपी, सीआरसी तथा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सामूहिक प्रयास से जिला स्तरीय रंगोत्सव कार्यक्रम सफलतापूर्वक एवं गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। इस रंगोत्सव ने विद्यार्थियों को अपनी कला, संस्कृति और रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने के लिए एक सशक्त मंच प्रदान किया तथा कार्यक्रम में प्रस्तुत विविध रंगों ने विविधता में एकता की भारतीय संस्कृति को जीवंत कर दिया।

(पेज 1 का शेष समाचार)

दमण की प्राथमिक शिक्षिका पूर्णिमा मोहनलाल...

वेस्ट में से बेस्ट टीएलएम में छात्रों की भागीदारी, इंटरनेट, ई-कन्टेन्ट जैसे विभिन्न माध्यमों से पढ़ाई में रुचि बढ़ाकर छात्रों के सर्वांगी विकास के लिए हमेशा प्रयास करती रही है। सामाजिक विज्ञान विषय में और एफएलएन में मुख्य प्रशिक्षक के रूप में कार्य करने, बालवाटिका के शिक्षकों को ट्रेनिंग देने, कोरोना काल में ऑनलाइन और ऑफलाइन शिक्षा देने जैसी विभिन्न शैक्षणिक गतिविद्धियाँ करती रही है। शिक्षा विभाग के कार्य के अलावा अन्य सरकारी विभाग द्वारा दिये गए कार्यो को भी पूरी प्रामाणिकता से निभाती है, जिसके चलते कैशलेस कैंपेन के तहत दिसंबर 2016 में दादरा नगर हवेली और दमण-दीव के प्रशासक प्रफुल पटेल के हस्तक प्रशंसा पत्र से सन्मानित हुई। स्वच्छ भारत अभियान के तहत विश्व शौचालय दिन प्रतियोगिता 2018 निबंध प्रतियोगिता में जिला स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। खेल-कूद में प्रेक्टिस करवाने और हर माह आनेवाले कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए छात्रों में रूचि बढ़ाई। हिन्दी पखवाड़ा, स्वच्छता पखवाड़ा, पोषण पखवाड़ा, मॉनसून मस्ती जैसे विभिन्न प्रतियोगिताओं में छात्रों को मार्गदर्शन देते हुए बच्चों को पुरस्कृत करवाया एवं स्वयं भाग लेते हुए कई पुरस्कार प्राप्त किए। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय मतदान में बीएलओ का कार्य, स्वास्थ्य कार्यक्रम ,फाइलेरिया ड्यूटी, नशामुक्त और स्वच्छ भारत अभियान , राष्ट्रीय डी वोर्मिंग डे, पीएम पोषण से संबंधित कार्य, शाला प्रवेशोत्सव, विदाई समारोह में या सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मार्गदर्शन, संचालन, एंकरिंग (उद्घोषक) और कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाती रही है। इस तरह शैक्षणिक, खेलकुद, सामाजिक, धार्मिक, संस्कृतिक ऐसे सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करते हुए राष्ट्रीय शिक्षक दिवस पर राष्ट्रपति के हाथों 50000 रुपये का नकद पुरस्कार, सिल्वर मेडल और सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया।

रक्षाबंधन के दिन समुद्र में लापता हुए दीव के मछुआरा का अब तक नहीं मिला सुराग

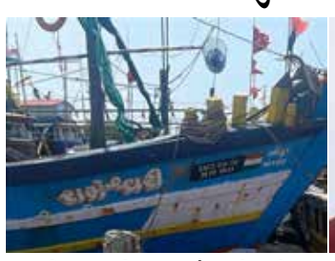

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दीव, 5 सितंबर। दीव के वाणीया वाड़ी-साउदवाड़ी क्षेत्र का 31 वर्षीय मछुआरा समुद्र में मछली पकड़ने के दौरान रहस्यमय परिस्थितियों में लापता हो गया। रक्षाबंधन के दिन हुई इस घटना के बाद से परिवार लगातार उसकी तलाश में जुटा है, लेकिन अब तक उसका कोई सुराग नहीं मिल पाया है। जानकारी के अनुसार वाणीया वाड़ी-साउदवाड़ी निवासी जेंतीलाल मेगी (उम्र 31 वर्ष) मछली पकड़ने वाली नाव रमेश्वरी (नं. IND DD 02 MM 1859) पर सवार था। यह नाव हरिश मेघजी की बताई जा रही है। बताया गया है कि 28 अगस्त को नाव मछली पकड़ने के बाद वापस लौट रही थी और वणकबारा से करीब 50 किमी दूर समुद्र में थी। इसी दौरान नाव पर मौजूद अन्य मछुआरों ने जेंतीलाल मेगी को तलाश किया, लेकिन वह नाव में नहीं मिला। नाव में जेंतीलाल के नहीं मिलने के बाद अन्य मछुआरों ने उसकी आसपास तलाश की। घटना की जानकारी उसके परिवार और पुलिस को दी गई। इसके बाद जेंतीलाल की खोजबीन शुरू की गई, लेकिन अब तक उसकी कोई जानकारी नहीं मिल सकी है। जेंतीलाल के अचानक लापता होने से परिवार बेहद चिंतित और परेशान है।
परिजनों द्वारा समुद्र में मछली पकड़ने वाली अन्य नौकाओं के मछुआरों तथा आम लोगों से भी अपील की गई है कि यदि जेंतीलाल मेगी के संबंध में किसी को कोई जानकारी मिले तो तत्काल परिवार को सूचित करें। परिवार ने संपर्क के लिए मोबाइल नं- 798494105 जारी किया है। इस संबंध में दीव जिला प्रशासन की आधिकारिक वेबसाइट पर पुलिस के लिए 100 और बचाव एवं राहत के लिए 1070 हेल्पलाइन नंबर भी उपलब्ध कराए गए हैं।

भारत ग्रो भी कर रहा है और रोजगार भी बना रहाः पीएम मोदी

-SRCC के शताब्दी समारोह में प्रधानमंत्री ने कहा कि जब कोई संस्थान 100 साल का होता है, तो वह उपलब्धियों और प्रेरणाओं का महासागर हो जाता है, 100 साल की इस यात्रा में SRCC ने पीढ़ियों को उज्जवल भविष्य से जोड़ा है

नई दिल्ली, 5 सितंबर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी दिल्ली के श्री राम कॉलेज ऑफ़ कॉमर्स (एसआरसीसी) के शताब्दी समारोह को संबोधित कर रहे हैं। इस दौरान उन्होंने कहा कि इस कॉलेज से निकले कई लोगों ने सफलता की कहानियां गढ़ी हैं। यहां से निकले लोग धुरंधर ना सही, लेकिन धूम को खूब मचाई है। उन्होंने कहा कि आज का दिन श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स के लिए ऐतिहासिक है। मैं आप सभी को एसआरसीसी के इस समारोह के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं।

पीएम मोदी ने कहा कि जब कोई संस्थान 100 साल का होता है तो वह उपलब्धियों और प्रेरणाओं का महासागर हो जाता है। 100 वर्ष की इस यात्रा में एसआरसीसी ने पीढ़ियों को उज्जवल भविष्य से जोड़ा है। इसकी यात्रा दरियागंज के एक छोटे से स्थान से शुरू हुई थी और अब यह एक विशाल वृक्ष बन चुका है, जिसने कई पीढ़ियों को छाव दी है।

उन्होंने कहा कि हमारे अरुण जेटली जी भी यही से पढ़े थे। मैं कह सकता हूं कि शायद हमारी कोई मुलाकात ऐसी नहीं होती थी, जब वे एसआरसीसी की कोई घटना न सुनाते हों। यहां से कई कलाकार, नेता और वकील निकले हैं। एसआरसीसी के लोगों ने हर क्षेत्र में धूम मचाई है।

मोदी ने कहा, लोग मेरे 2013 के संबोधन को याद कर रहे हैं। उस समय आपके स्थानों पर यहां आपके सीनियर बैठे थे। मैं तब देश की मुख्य विपक्षी पार्टी का सदस्य भी था। उस समय सभी लोग यह उम्मीद कर रहे थे कि मैं तब की केंद्र सरकार पर आरोप लगाऊंगा, लेकिन मैंने तत्कालीन सरकार का आलोचक होने के बावजूद इस मंच का उपयोग नहीं किया था। मैंने एक विजन रखा था और सकारात्मक बात कही थी। मैं उस रास्ते पर ही चलता रहा हूं। उन्होंने कहा कि उस समय (2013) विकास फर्श पर था और महंगाई अर्श पर थी। उस समय घोटाले चरम पर थे और भ्रष्टाचारी बेखौफ घूमते थे। आतंकी बेलगाम थे और पाकिस्तान बेकाबू था। एक वह दिन था और एक आज का दिन है, जब आतंकवाद फैलाने वाले पस्त पड़े हैं, पाकिस्तान कोई नापाक हरकत करता है तो भारतीय सेना घर में घुसकर मारती है, नक्सलवाद की कमर तोड़ दी गई है।

प्रधानमंत्री ने कहा, भारत की 7.8% की ग्रोथ भी ऐसे समय पर आई है, जब वेस्ट एशिया का युद्ध चल रहा है और जब ट्रेड से जुड़ी अर्चन भी रही है। उस समय ऐसी ग्रोथ हासिल करना भारत के सामर्थ्य को दिखाता है। उन्होंने एसआरसीसी के पूर्व छात्रों की उपलब्धियों का भी जिक्र किया. पीएम मोदी ने कहा, "आपकी भाषा में कहूं तो यहां के एलुमनाई असली 'ओजी' हैं। उन्होंने दुनिया भर में एसआरसीसी का नाम रोशन किया है और अलग-अलग क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है।"

प्रधानमंत्री ने पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण जेटली को याद करते हुए कहा कि उनसे शायद ही कभी ऐसी कोई मुलाकात हुई हो, जिसमें उन्होंने एसआरसीसी के दिनों का कोई किस्सा साझा न किया हो। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि कई बार अरुण जेटली उन्हें वही किस्से बार-बार सुनाया करते थे।

गौरतलब है कि इस समारोह के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को दिल्ली मेट्रो से सफर कर दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स (एसआरसीसी) के शताब्दी समारोह में पहुँचे थे। प्रधानमंत्री शनिवार शाम करीब 6:58 बजे दिल्ली मेट्रो की येलो लाइन पर स्थित विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशन पहुंचे।

पीएम मोदी के इस वीवीआईपी दौरे को देखते हुए सुरक्षा एजेंसियों ने सुरक्षा के अभूतपूर्व इंतजाम किए। येलो लाइन के विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशन के चप्पे-चप्पे पर अतिरिक्त सुरक्षा बलों की तैनाती की गई थी। पीएम मोदी का यह दौरा ऐसे समय में हो रहा है, जब भारतीय जनता पार्टी ने युवा पीढ़ी और जेन-जी मतदाताओं के बीच अपनी पैठ मजबूत करने के प्रयासों को काफी तेज कर दिया है। प्रधानमंत्री का यह दौरा प्रतिष्ठित संस्थान एसआरसीसी के 100 वर्ष पूरे होने के ऐतिहासिक अवसर पर आयोजित शताब्दी समारोह में हिस्सा लेने के लिए हुआ। इस कार्यक्रम के चलते दिल्ली पुलिस और केंद्रीय सुरक्षा बलों ने विश्वविद्यालय प्रशासन और मेट्रो प्रबंधन के साथ मिलकर पहले ही एक विस्तृत सुरक्षा ब्लूप्रिंट तैयार कर लिया था, जिसके तहत शनिवार शाम को सुरक्षा व्यवस्था बेहद चाक-चौबंद नजर आई।

मंडी में सांसद निधि खर्च न होने पर भड़कीं कंगना रनौत, अधिकारियों से मांगा हिसाब

मंडी (ईएमएस)। हिमाचल प्रदेश के मंडी से भाजपा सांसद कंगना रनौत ने जिला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति की बैठक में सांसद निधि के इस्तेमाल को लेकर अधिकारियों पर जमकर नाराजगी जताई। विकास कार्यों और केंद्र प्रायोजित योजनाओं की समीक्षा के दौरान उन्होंने अधिकारियों से जवाबदेही और पारदर्शिता के साथ काम करने की सख्त हिदायत दी। बैठक में सांसद निधि के तहत स्वीकृत करीब 11 करोड़ रुपये के फंड का अपेक्षित इस्तेमाल नहीं होने को लेकर कंगना ने अधिकारियों से सवाल किए। उन्होंने सभी प्रखंड विकास अधिकारियों से विकास कार्यों की प्रगति रिपोर्ट मांगी और कहा कि बैठकों को सिर्फ औपचारिकता तक सीमित नहीं रखा जा सकता। उनके मुताबिक, बैठक में लिए गए फैसलों का असर जमीन पर दिखाई देना चाहिए। कंगना रनौत ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि केंद्र सरकार की योजनाओं का लाभ केवल कागजों तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि गांवों और जरूरतमंद लोगों तक पहुंचना चाहिए। उन्होंने सरकारी धन के दुरुपयोग पर भी चिंता जताई और कहा कि जनता के पैसे का इस्तेमाल पूरी पारदर्शिता के साथ होना चाहिए। उन्होंने विकास कार्यों की गुणवत्ता और समयबद्धता सुनिश्चित करने पर जोर देते हुए कहा कि किसी भी स्तर पर लापरवाही या अनियमितता को नजरअंदाज नहीं किया जाएगा। कंगना ने यह भी कहा कि जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों की जिम्मेदारी है कि स्वीकृत योजनाओं को तेजी से जमीन पर उतारा जाए।

केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह 07 सितम्बर को पणजी में पश्चिमी क्षेत्रीय परिषद की 28वीं बैठक की करेंगे अध्यक्षता

■ सभी राज्य सरकारों, केंद्रीय मंत्रालयों और विभागों के सहयोग से जून 2014 से अब तक विभिन्न क्षेत्रीय परिषदों और इनकी स्थायी समितियों की कुल 70 बैठकें हुई है

पीआईबी दिल्ली, 5 सितंबर। केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह सोमवार 07 सितम्बर को गोवा की राजधानी पणजी में पश्चिमी क्षेत्रीय परिषद की 28वीं बैठक की अध्यक्षता करेंगे। पश्चिमी क्षेत्रीय परिषद में गोवा, गुजरात और महाराष्ट्र राज्य तथा संघ राज्यक्षेत्र दादरा नगर हवेली और दमण-दीव शामिल हैं। राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 की धारा 15 से 22 के तहत पश्चिमी क्षेत्रीय परिषद सहित 5 क्षेत्रीय परिषदों की स्थापना की गई है। केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह पश्चिमी क्षेत्रीय परिषद के अध्यक्ष हैं और मुख्यमंत्री, गोवा इसके उपाध्यक्ष हैं। सदस्य राज्यों में से एक राज्य के मुख्यमंत्री (हर साल बारी-बारी से) परिषद के उपाध्यक्ष होते हैं। यह बैठक अंतर-राज्य परिषद सचिवालय, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गोवा सरकार की मेज़बानी में आयोजित की जा रही है। इस क्षेत्रीय परिषद में पश्चिमी क्षेत्र के प्रत्येक राज्य के मुख्यमंत्री तथा दो वरिष्ठ मंत्री सदस्य हैं। भारत सरकार और राज्य सरकारों/ संघ राज्यक्षेत्र के वरिष्ठ अधिकारी भी परिषद की इस बैठक में भाग लेंगे।

क्षेत्रीय परिषद ने मुख्य सचिवों के स्तर पर एक स्थायी समिति का भी गठन किया है। राज्यों द्वारा प्रस्तावित मुद्दों को प्रथमतः क्षेत्रीय परिषद की स्थायी समिति के समक्ष चर्चा हेतु प्रस्तुत किया जाता है, जिनमें विचारोपरांत शेष बचे मुद्दों को क्षेत्रीय परिषद की बैठक में विचारण हेतु प्रस्तुत किया जाता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने सहकारी संघवाद के आधार पर देश के सामने टीम भारत की कल्पना रखी है और क्षेत्रीय परिषदें इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने सर्वांगीण विकास हासिल करने के लिए सहकारी और प्रतिस्पर्धी संघवाद का लाभ उठाने की आवश्यकता पर बल दिया है। क्षेत्रीय परिषदें, इस भावना के साथ कि मजबूत राज्य ही मजबूत राष्ट्र बनाते हैं, दो या अधिक राज्यों अथवा केंद्र और राज्यों को एक-साथ प्रभावित करने वाले मुद्दों पर, संवाद और चर्चा के लिए एक व्यवस्थित तंत्र, तथा इसके जरिये आपसी सहयोग को बढ़ाने के लिए मंच प्रदान करती हैं। क्षेत्रीय परिषदों की भूमिका सलाहकारी है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में ये परिषदें विभिन्न क्षेत्रों में आपसी समझ और सहयोग के स्वस्थ बंधन को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण कारक साबित हुई हैं। सभी राज्य सरकारों, केंद्रीय मंत्रालयों और विभागों के सहयोग से पिछले 12 वर्षों में (जून 2014 से अब तक) विभिन्न क्षेत्रीय परिषदों और इनकी स्थायी समितियों की कुल 70 बैठकें हुईं है।

क्षेत्रीय परिषदें, केंद्र और सदस्य राज्यों/ संघ राज्यक्षेत्रों के बीच, सदस्य राज्यों/ संघ राज्यक्षेत्रों के मध्य, तथा क्षेत्र के मुद्दों और विवादों को हल करने और उन पर प्रगति लाने के लिए एक श्रेष्ठ मंच प्रदान करती है। ये परिषदें, राष्ट्रीय महत्व के व्यापक मुद्दों पर भी चर्चा करती हैं जिनमें महिलाओं और बच्चों के खिलाफ दुष्कर्म के मामलों की त्वरित जांच और इनके शीघ्र निपटान के लिए फास्ट ट्रैक विशेष न्यायालयों (एफटीएससी) का कार्यान्वयन, आपातकालीन प्रतिक्रिया सहायता प्रणाली का कार्यान्वयन (ERSS-112), खाद्य सुरक्षा मानकों से संबंधित मुद्दा, प्रत्येक गांव के नियत दायरे में ब्रिक-एंड-मोर्टार बैंकिंग सुविधा का प्रदाय, तथा पोषण, शिक्षा, स्वास्थ्य, विद्युत रिफ़ॉर्म्स, शहरी प्लानिंग, सहकारिता व्यवस्था का सुदृढीकरण, साइबर अपराध और डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर से संबंधित मुद्दे, आदि शामिल हैं।

शिक्षक दिवस पर सरकारी उच्च विद्यालय फलांडी गांव में बाल विवाह मुक्त भारत जागरूकता अभियान का हुआ आयोजन

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, सिलवासा, 05 सितंबर। शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर सरकारी उच्च विद्यालय फलांडी गांव में बाल विवाह मुक्त भारत जागरूकता अभियान के अंतर्गत विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं समुदाय के लोगों को बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीति के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करना तथा बाल विवाह की रोकथाम के लिए सामूहिक रूप से संकल्पित करना था। कार्यक्रम की शुरुआत भारत के महान शिक्षाविद एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्मदिवस के अवसर पर शिक्षक दिवस की शुभकामनाओं एवं उनके विचारों को स्मरण करते हुए की गई। विद्यार्थियों ने शिक्षक दिवस के महत्व पर अपने विचार व्यक्त करते हुए शिक्षकों के प्रति सम्मान एवं कृतज्ञता प्रकट की। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों द्वारा बाल विवाह मुक्त भारत विषय पर प्रभावी जागरूकता नाटक प्रस्तुत किया गया। नाटक के माध्यम से बाल विवाह के कारण बच्चों के शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, भविष्य एवं व्यक्तिगत विकास पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को सरल एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया। विद्यार्थियों ने अपने अभिनय के माध्यम से समाज को बाल विवाह के विरुद्ध आवाज उठाने तथा बच्चों को शिक्षा एवं सुरक्षित बचपन देने का संदेश दिया। इस अवसर पर प्रयास जुवेनाइल एंड सेंटर सोसाइटी के सोशल वर्कर एवं सपोर्ट पर्सन अमोल मेश्राम ने विद्यार्थियों को बाल विवाह की रोकथाम, बाल अधिकार, शिक्षा के महत्व तथा बाल विवाह से होने वाले सामाजिक एवं व्यक्तिगत दुष्परिणामों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। अमोल मेश्राम ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि भारत से उठी बाल विवाह के खिलाफ आवाज आज पूरी दुनिया के संकल्प में बदल रही है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 27 नवंबर को बाल विवाह, कम उम्र और जबरन विवाह की समाप्ति के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस घोषित किया जाना बाल विवाह के खिलाफ भारत में चल रहे जमीनी प्रयासों को मिली महत्वपूर्ण वैश्विक मान्यता है।

उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि जस्ट राइटस फॉर चिल्ड्रेन और उसके सहयोगी संगठनों के वर्षों से चले आ रहे अथक प्रयासों का भी परिणाम है। उन्होंने कहा कि 27 नवंबर की तारीख विशेष महत्व रखती है, क्योंकि वर्ष 2024 में इसी दिन भारत सरकार ने नागरिक समाज संगठनों के साथ मिलकर बाल विवाह मुक्त भारत अभियान की शुरुआत की थी। उन्होंने कहा, "यह हमारे लिए गौरव का क्षण जरूर है, लेकिन जश्न मनाकर रुक जाने का समय नहीं है। संयुक्त राष्ट्र की यह घोषणा हमें नई जिम्मेदारी देती है कि दुनिया के हर बच्चे को बाल विवाह मुक्त बचपन मिले। जब तक हमारे जिले के किसी गांव में एक भी बच्चा बाल विवाह के डर में जी रहा है, तब तक हमारी लड़ाई अधूरी है।" उन्होंने आगे कहा कि दादरा नगर हवेली में प्रयास संस्था द्वारा सरकार एवं प्रशासन के सहयोग से कानूनी हस्तक्षेपों के माध्यम से बाल विवाह रुकवाने के साथ-साथ बड़े पैमाने पर स्कूलों, पंचायतों एवं गांवों में जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। समुदाय के लोगों को बाल विवाह के खिलाफ शपथ दिलाने, आर्थिक रूप से कमजोर एवं बाल विवाह के लिहाज से संवेदनशील परिवारों को सरकारी योजनाओं से जोड़ने तथा पढ़ाई छोड़ चुके बच्चों को दोबारा स्कूल से जोड़ने जैसे प्रयास भी किए जा रहे हैं।

उन्होंने कहा कि सिर्फ कानून बनाना ही पर्याप्त नहीं है। बाल विवाह की रोकथाम के लिए परिवार, स्कूल, पंचायत, प्रशासन, पुलिस, शिक्षक, धर्मगुरु, जनप्रतिनिधि और समुदाय - सभी को मिलकर काम करना होगा। इसी सामूहिक प्रयास से बाल विवाह को सामाजिक रूप से समाप्त किया जा सकता है। प्रयास जुवेनाइल एंड सेंटर सोसाइटी, जो जस्ट राइटस फॉर चिल्ड्रेन का सहयोगी संगठन है, उसने संयुक्त राष्ट्र द्वारा 27 नवंबर को बाल विवाह, कम उम्र और जबरन विवाह की समाप्ति के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस घोषित किए जाने का स्वागत किया। जेआरीस के संस्थापक भुवन ऋ भु द्वारा बाल विवाह के खात्मे के लिए एक अलग अंतर्राष्ट्रीय दिवस घोषित करने की पहल लंबे समय से की जा रही थी। मार्च 2026 में संयुक्त राष्ट्र में अपने संबोधन के दौरान उन्होंने वैश्विक नेताओं की मौजूदगी में इस दिशा में प्रस्ताव लाने की बात कही थी। इस पहल को सिएरा लियोन की फर्स्ट लेडी डॉ. फातिमा मादा बायो सहित कई वैश्विक प्रतिनिधियों का समर्थन मिला। इसके बाद सिएरा लियोन ने भारत सहित 67 देशों के अनुमोदन वाला प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रस्तुत किया, जिसमें 27 नवंबर को बाल विवाह समाप्त करने के लिए समर्पित वैश्विक दिवस घोषित करने की मांग की गई थी। 4 सितंबर 2026 को संयुक्त राष्ट्र ने इस प्रस्ताव को पारित कर दिया। यह घोषणा बाल विवाह के खिलाफ भारत में चल रहे जमीनी अभियानों के लिए एक महत्वपूर्ण वैश्विक मान्यता है और दुनिया भर में बच्चों के अधिकारों, शिक्षा एवं सुरक्षित बचपन की दिशा में एक मजबूत संकल्प को दर्शाती है।

जस्ट राइटस फॉर चिल्ड्रेन अपने सहयोगी संगठनों के साथ देशभर में बाल विवाह के खिलाफ अभियान चला रहा है। सरकारों एवं कानून-प्रवर्तन एजेंसियों के सहयोग से समुदायों, स्कूलों, पंचायतों, आदिवासी एवं वंचित समुदायों, महिलाओं, पुलिसकर्मियों, धर्मगुरुओं एवं जनप्रतिनिधियों को बाल विवाह रोकने के लिए एकजुट किया जा रहा है। इस अभियान के तहत देश में 5,50,000 से अधिक बाल विवाह रुकवाए जाने का दावा किया गया है। यह इस बात का प्रमाण है कि जब सरकार, नागरिक समाज और समुदाय एकजुट होकर कार्य करते हैं, तो बाल विवाह को रोका जा सकता है और भविष्य में इसे पूरी तरह समाप्त करने की दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है। बाल विवाह की दर में भी गिरावट दर्ज की गई है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 (2019-21) के अनुसार भारत में 18 वर्ष से पहले विवाह करने वाली लड़कियों का अनुपात 23.3 प्रतिशत था, जबकि राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-6 (2023-24) में यह घटकर 20.1 प्रतिशत बताया गया है। बाल विवाह को समाप्त करने के ये प्रयास सतत विकास लक्ष्य 5 के लक्ष्य 5.3 के अनुरूप भी हैं, जिसमें बाल विवाह, कम उम्र और जबरन विवाह जैसी हानिकारक प्रथाओं को समाप्त करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की गई है।

कार्यक्रम के अंत में विद्यार्थियों को बाल विवाह के खिलाफ शपथ दिलाई गई। विद्यार्थियों ने संकल्प लिया कि वे स्वयं बाल विवाह का समर्थन नहीं करेंगे, अपने आसपास होने वाले बाल विवाह की जानकारी जिम्मेदार व्यक्तियों एवं प्रशासन तक पहुंचाएंगे तथा बच्चों की शिक्षा और अधिकारों की रक्षा के लिए समाज में जागरूकता फैलाएंगे। कार्यक्रम में विद्यालय की इंचार्ज दिव्या देसाई मैडम, उमरकोई पंचायत के सरपंच

कॅरियर की अंधी दौड़ में हांफती युवा पीढ़ी!

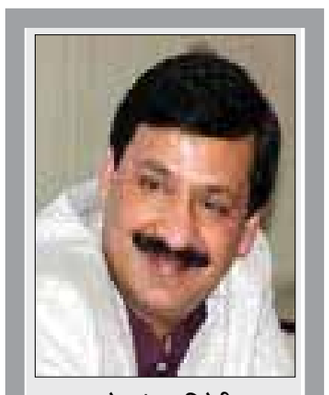

प्रो. संजय द्विवेदी

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हमारे सामने नई चुनौतियां पेश की हैं। वे बेहतर सहायक से ज्यादा तनाव के वाहक हैं। युवाओं में एआई के कारण नौकरियां जाने और खुद के अप्रासंगिक हो जाने का भय बैठ गया है। वे इस पूरे दृश्य को बहुत चिंता से देख रहे हैं। री-स्किलिंग का दबाव उन्हें गहरे भय में डाल रहा है।

भारत युवाओं का देश है। जाहिर है ऐसे देश की चिंताएं बहुत अलग होती हैं। उसकी ज्यादातर आबादी को शिक्षा, रोजगार और सुंदर जीवन की कामना होती है। उनकी महत्वाकाक्षाएं, अवसरों की होड़ और दौड़। पाने की खुशी और न मिलने का आक्रोश सब साझा होते हैं। करियर में सफल होने, जल्दी और ज्यादा पाने की कामनाएं इस दौर का मूल्य हैं। ऐसे में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों को गहरी चुनौती है। संकट के बादल गहरे हैं। समाधान के सूत्र न्यूनतम।

बदलती कार्य संस्कृति

सरकारों में नौकरियों के दरवाजे सिकुड़ रहे हैं। ज्यादातर नौकरियां निजी क्षेत्रों में ही हैं। नौ से पांच बजे की पक्की नौकरियां अब स्वप्न ही हैं। उनकी जगह गिग इकोनामी (फ्री लांस, काट्रैक्ट वर्क) ने ले ली है। आर्थिक स्वतंत्रता की तो छोड़िए यह माडल भविष्य की अनिश्चितता और वित्तीय अस्थिरता भी ला रहा है, जिसके नाते बढ़ता मानसिक तनाव और अवसाद संकट को गहरा कर रहा है। हिंदुस्तान अलग तरह से चलता रहा है। परिवार इसकी प्राणवायु रहे हैं। परिवार का कोई एक आदमी नौकरी पर रहता था, शेष अपने घर-इलाके-गांव में बैठकर स्थानीय स्तर पर जो कर सकते थे करते थे। परिवार की छाया में सुरक्षा थी, संरक्षण था, बच्चों को संस्कारित करने के पारिवारिक उपक्रम थे। नई व्यवस्था ने एक परिवार में कई परिवार खड़े कर दिए हैं। इससे एक की जगह अब चार परिवार, चार चूल्हे और चार व्यवस्थाएं खड़ी करनी पड़ रही है। आप कितना भी कमा रहे हैं वह कम ही है। इसने नई पीढ़ी को ईएमआई के दुष्चक्र में फंसा कर नई व्यवस्थाओं का गुलाम बना दिया है। परिवार व्यवस्था भारत की संस्कृति का आधार रही है। वह संस्कारशाला भी है।

कार्य और जीवन का संतुलन

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने हमारे सामने नई चुनौतियां पेश की हैं। वे बेहतर सहायक से ज्यादा तनाव के वाहक हैं। युवाओं में एआई के कारण नौकरियां जाने और खुद के अप्रासंगिक हो जाने का भय बैठ गया है। वे इस पूरे दृश्य को बहुत चिंता से देख रहे हैं। री-स्किलिंग का दबाव उन्हें गहरे भय में डाल रहा है। इससे मानसिक थकान होना स्वाभाविक ही है। इस समय सबसे बड़ी चिंता कार्य और जीवन संतुलन की है। वर्क फ्राम होम और डिजिटल कनेक्टिविटी ने सारा कुछ बदलकर रख दिया है। काम के घंटे अब प्रायः 24 घंटे ही हैं। देर रात तक ई-मेल, रिर्पोट्स और मैसेज का

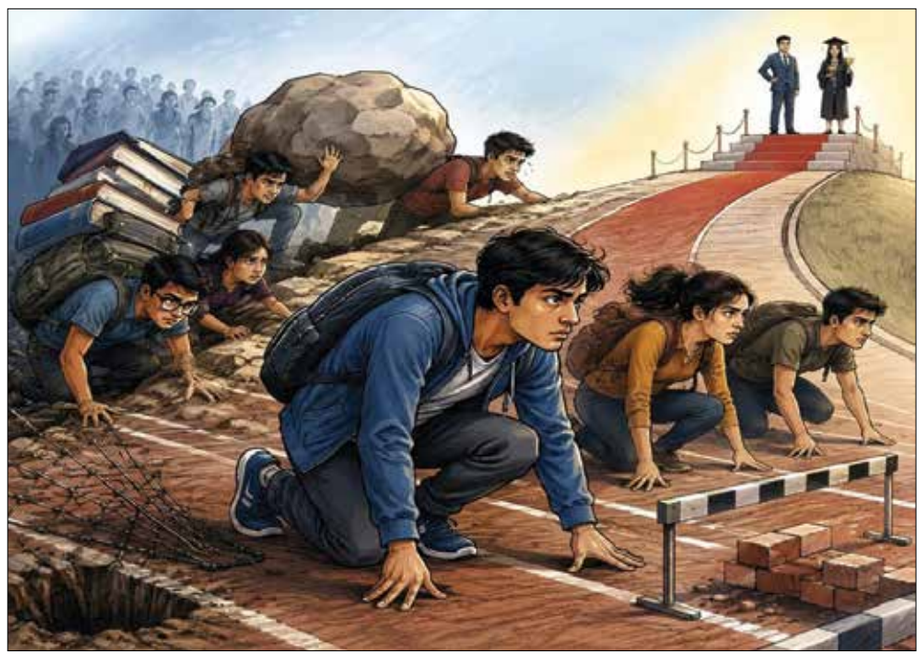

जवाब देते हुए युवा ह्यआलवेज आनह्न मोड में रहते हैं। जिससे पारिवारिक जीवन, व्यक्तिगत समय और नींद सब प्रभावित हो रही है। बर्नआउट की बढ़ती दर, काम के अनिश्चित घंटे, स्पर्धा का वातावरण और टारगेट पूरे करने का दबाव साथ चलता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन(डब्लूएचओ) ने बर्नआउट को प्रोफेशनल बीमारी मान लिया है। यह अब भारतीय कारपोरेट जगत में एक अनिवार्य समस्या बन गयी है।

सोशल मीडिया से बनती छवियां

सोशल मीडिया ने समाज में अलग तरह की स्पर्धा की छवियां प्रस्तुत की हैं। अपने सुखद, आनंद के क्षणों को वायरल करने की बीमारी दूसरे की पीड़ा का कारण बन जाती है। किसी की बड़ी पदस्थापना, उसकी पार्टियां, रील्स, पर्यटन की तस्वीरें, महंगी जीवनशैली का विज्ञापन करना, सफलताओं के हाईलाइट्स देखकर तुलना और स्पर्धा की बातें तेज होती हैं। इससे हीनभावना और तनाव का जन्म भी होता है। परिजन और बच्चे भी अपने पालकों से ऐसी ही जीवन शैली की अपेक्षा करते हैं। ऐसे समय में युवाओं के लिए तनाव प्रबंधन की विधियां समझने और उन्हें जीवन की ठोस सच्चाइयों से जोड़ने की जरूरत है। योग, ध्यान के अनेक अभ्यास जीवन में शांति ला सकते हैं। जिंदगी के हमारे दृष्टिकोण में परिवर्तन ला सकते हैं। रील्स की तुरंतवादी जीवनशैली और जीवन के सतत संघर्ष को समझने की जरूरत है।सोशल मीडिया से प्रक्षेपित हो रही छवियों से प्रभावित होने के बजाए, लोगों के संघर्ष और उससे उपजी सफलताओं के पाठ भी पढ़े जाने चाहिए।

उद्यमिता और उसके जोखिम

नए समय ने युवाओं को उद्यमिता के गुर दिए हैं। यह पीढ़ी जोखिम उठाने और सफलताओं के नए शिखर छूने वाली पीढ़ी है। इसके मंत्र अलग हैं। वे जल्दी से सफलताओं के नए क्षितिज को छूना चाहते हैं। छू भी रहे हैं। कम आयु में उनकी सफलताएं विस्मित करने वाली हैं। उनके स्टार्टअप धूम मचा रहे हैं। सफलता की बड़ी कहानियां लिख रहे हैं। प्रेरित कर रहे हैं। इसके दूसरे पक्ष का विचार भी जरूरी है। हमें पता है कि 90 प्रतिशत से अधिक स्टार्टअप शुरूआती सालों में ही अन्यान्य कारणों से विफल हो जाते हैं। विफलता का डर, निवेशकों का दबाव, फंडिंग का संकट संस्थापकों और शुरूआती कर्मचारियों में मानसिक तनाव पैदा कर ही देता है।

इतने बड़े देश में हर साल लाखों युवा हाथ काम मांगने के लिए खड़े हो जाते हैं। उनके पास डिग्रियां भी होती हैं। किंतु वे कौशल युक्त नहीं होते। वे डिग्रीधारी हैं किंतु किसी काम के नहीं हैं। बाजार की जरूरतें अलग हैं, उनके कौशल अलग हैं। ऐसे में बहुत योग्य लोगों को भी अपेक्षित नौकरी नहीं मिल पाती, अच्छे वेतन की तो जाने ही दीजिए। युवाओं के ज्यादातर संकट वास्तविक हैं। वे जानकारी से भरपूर हैं, उनके पास अवसरों का जनतंत्र है। आकांक्षाओं की बाढ़ है। वे सूचनाओं से लदे-फंदे हैं। यह ज्यादा सूचनाएं भी दुख और भ्रम का कारण बन रही हैं। आकांक्षाओं का बड़ा आकाश उतनी ही गहरी निराशा लेकर लाता है। यह साधारण नहीं है कि आईआईटी के विद्यार्थी आत्महत्या कर रहे हैं। ऐसे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का अवसान उनके परिवार,देश और समाज के लिए भी बड़ी क्षति है । परीक्षाओं में मिलती असफलताएं, लीक होते प्रश्नपत्र, परीक्षाओं की नष्ट होती शुचिता, सरकारी-प्रशासनिक तंत्र की कदाचार रोकने की विफलताओं ने युवाओं को गहरी चिंताएं दी हैं। शिक्षा के निजीकरण और उससे उपजे बाजारीकरण ने हालात बहुत बदल दिए हैं। महंगी शिक्षा के लिए परिवार कर्ज में डूब रहे हैं। प्रतिभा पलायन का संकट तो है ही। समाज में यह बात बहुत गहरे पैठ रही है इस देश में प्रतिभाशाली युवाओं की जगह नहीं बची है। यह तथ्य नहीं किंतु गहराई से फैलती धारणा है। आप बिना जुगाड़ के इस व्यवस्था में सफल नहीं हो सकते। किसी राष्ट्र जीवन में ऐसी धारणाएं ठीक नहीं हैं। हमें समझना होगा कि राष्ट्र से हम सबकी सामूहिक आकांक्षाएं,साझे प्रयासों से ही फलीभूत होंगी। भारत की आजादी के आठ दशक अभूतपूर्व प्रगति, एकत्व और जीवंत लोकतंत्र के प्रमाण हैं। हर राष्ट्र जीवन में चुनौतियां होती हैं, उससे जूझकर हम अपने संकटों का हल खोजते हैं। देश की युवा पीढ़ी भी अपने संकटों के बीच इस राष्ट्र जीवन के समक्ष उपस्थित प्रश्नों के ठोस और वाजिब हल जरुर तलाशेगी। युवा शक्ति की तेजस्विता, नवाचारों और आत्मविश्वास को देखकर यह विश्वास सहज ही होता है।

संपादकीय

बचाने वाला न्याय

जब भी कोई बच्चा किसी अपराध में संलिप्त पाया जाता है तो यह समाज में गंभीर विमर्श होता है कि दंड सजा देने वाला हो या सुधारकारी। निश्चित तौर पर कोई भी बच्चा जन्म से अपराधी नहीं होता। उसकी पारिवारिक माली हालत,परिवार व पड़ोस का माहौल और परिस्थितिजन्य हालात उसे अपराध की अंधी गलियों में धकेल देते हैं। सही मायने में कोई भी बच्चा जब आपराधिक न्याय प्रणाली के दायरे में आता है तो वह वह हमारे समाज की उन तमाम नाकामियों का नतीजा होता है, जिसकी शुरूआत पहले ही हो चुकी होती है। उसका सामाजिक परिवेश और परिवार की आर्थिक मजबूरियां भी उसके कारणों में शामिल होती हैं।इसी आलोक में देश की शीर्ष अदालत की उस टिप्पणी से सहमत हुआ जा सकता है कि गरीबी, असमानता, अशिक्षा और सामाजिक भेदभाव बच्चों में अपराध की प्रवृत्ति को बढ़ावा दे सकते हैं। दूसरे शब्दों में सुप्रीम कोर्ट की यह टिप्पणी हमें याद दिलाती है कि अपराध के साथ-साथ उन हालात को भी गंभीरता से लिया जाना चाहिए, जिनमें वह अपराध हुआ है। निस्संदेह, यह सर्वमान्य सत्य नहीं हो सकता कि गरीबी ही हर बच्चे को अपराधी बनाती है। लेकिन किशोरों के अपराध-उन्मुख होने की एक बड़ी वजह आर्थिक विपन्नता जरूर है। दरअसल, परिवार की आर्थिक बदहाली बच्चे को नियमित स्कूल जाने से रोकती है। इसके अलावा परिवार में कलह, परिवार के मुखिया का नशीले पदार्थों का आदी होना, बच्चे की कुसंगति, साथियों का दबाव और सामाजिक भेदभाव जैसी चीजों का सामूहिक प्रभाव ऐसी स्थितियां पैदा कर सकता है, जो कुछ बच्चों को अपराध की अंधी गलियों में धकेल सकता है। लेकिन यह भी एक हकीकत है कि राज्य इन जोखिमों का समाधान सिर्फ तब नहीं कर सकता है जबकि बच्चा पुलिस स्टेशन या जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड यानी किशोर न्याय बोर्ड तक पहुंच जाए। इस स्थिति में बचाव की गुंजाइश कम ही बचती है। देश की शीर्ष अदालत की यह चिंता कि किशोर न्याय अधिनियम के सुरक्षात्मक प्रावधान सभी जरूरतमंद बच्चों तक नहीं पहुंच पाए हैं, इस कानून को लागू करने में व्याप्त गंभीर कमी को ही उजागर करती है। सही मायने में किशोर न्याय अधिनियम के अंतर्गत कानून बदले की भावना पर नहीं, बल्कि बच्चों की देखभाल,सुरक्षा, पुनर्वास और अच्छा नागरिक बनाकर समाज में फिर से शामिल करने की सोच पर आधारित रहा है। इसके अलावा बच्चे न्यायिक व्यवस्था के ऐसे कुचक्र में फंस सकते हैं, जहां इसके क्रियान्वयन से जुड़े लोग शायद उनकी कम उम्र को गंभीरता से न लें या फिर बच्चों को दी जाने वाली सुरक्षा की संवेदनशीलता को पूरी तरह से न समझ पाएं। सही मायने में इस जटिल समस्या का समाधान किशोर न्याय व्यवस्था को अपराध को न होने देने की सोच पर केंद्रित बनाने से संभव हो सकता है।

चिंतन-मनन

पशुवध निंदनीय-दंडनीय कर्म

सतोगुण में किये गये पुण्यकर्मो का फल शुद्ध होता है, अतएव वे मुनिगण, जो समस्त मोह से मुक्त हैं, सुखी रहते हैं। लेकिन रजोगुण में किये गये कर्म दुख का कारण बनते है। भौतिक सुख के लिए जो भी कार्य किया जाता है, उसका विफल होना निश्चित है। उदाहरणार्थ, यदि कोई गगनचुम्बी प्रासाद बनवाना चाहता है, तो उसके पूर्व अत्यधिक कष्ट उठाना पड़ता है। मालिक को धन-संग्रह के लिए कष्ट उठाना पड़ता है और प्रासाद बनाने वाले श्रमिकों को श्रम करना होता है। अतएव भगवद्गीता का कथन है कि रजोगुण के अधीन होकर जो भी कर्म किया जाता है, उसमें निश्चित रूप से महान कष्ट भोगने होते हैं।

इससे यह मानसिक तृप्ति हो सकती है कि मैंने यह मकान बनवाया या इतना धन कमाया, लेकिन यह वास्तविक सुख नहीं है। जहां तक तमोगुण का सम्बन्ध है, कर्ता को कुछ ज्ञान नहीं रहता, अतएव उसके समस्त कार्य उस समय दुखदायक होते हैं और बाद में उसे पशु जीवन में जाना होता है। पशु जीवन सदैव दुखमय है, यद्यपि माया के वशीभूत होकर वे इसे समझ नहीं पाते। पशुओं का वध भी तमोगुण के कारण है। पशु-बधिक यह नहीं जानते कि भविष्य में इस पशु को ऐसा शरीर प्राप्त होगा, जिससे वह उनका वध करेगा। यही प्रकृति का नियम है। मानव समाज में यदि कोई किसी मनुष्य का वध कर दे तो उसे प्राणदंड मिलता है।

यह राज्य का नियम है। अज्ञानवश लोग अनुभव नहीं करते कि संसार परमेश्वर द्वारा नियंत्रित एक पूरा राज्य है। प्रत्येक जीवित प्राणी परमेश्वर की संतान है और उन्हें एक चींटी तक का मारा जाना सह्य नहीं हैं। इसके लिए मनुष्य को दंड भोगना पड़ता है। अतएव स्वाद के लिए पशु-वध में रत रहना घोर अज्ञान मनुष्य को पशुओं के वध की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ईश्वर ने अनेक अच्छी वस्तुएं प्रदान की हैं। यदि कोई किसी कारण मांसाहार करता है, तो यह समझना चाहिए कि वह अज्ञानवश ऐसा कर रहा है और अपने भविष्य को अंधकारमय बना रहा है।

कहीं बाढ़ का प्रलय, कहीं बूंद-बूंद पानी को तरसती धरती

कांतिलाल मांडोत

प्रकृति का संतुलन बिगड़ा तो इंसान की सारी तैयारियां पड़ जाती हैं छोटी...

मानसून भारत के लिए केवल बारिश का मौसम नहीं, बल्कि करोड़ों लोगों के जीवन, खेती और अर्थव्यवस्था से जुड़ा हुआ प्राकृतिक चक्र है। यही बारिश कहीं जीवनदायिनी बनकर खेतों को हरा-भरा करती है तो कहीं उसका विकराल रूप बाढ़ बनकर बस्तियों, सड़कों और घरों को अपनी चपेट में ले लेता है। इस समय देश के कई हिस्सों में मौसम का यही विरोधाभासी चेहरा दिखाई दे रहा है। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में गंगा और यमुना के जलस्तर में वृद्धि से निचले इलाकों में बाढ़ का पानी पहुंच रहा है। कछारी क्षेत्र में अनेक मकानों के डूबने से लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाने की जरूरत पड़ रही है। दूसरी ओर बिहार में कई प्रमुख नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं और प्रशासन को राहत एवं बचाव की तैयारियां तेज करनी पड़ी हैं। लेकिन देश के ही कुछ दूसरे हिस्से ऐसे हैं जहां पर्याप्त बारिश नहीं होने से खेतों में खड़ी फसलें सूखने लगी हैं और किसान आसमान की ओर उम्मीद लगाए बैठे हैं।

यह स्थिति हमें प्रकृति की उस शक्ति का एहसास कराती है जिसके सामने मनुष्य की तकनीकी उपलब्धियां भी सीमित दिखाई देती हैं। मनुष्य ने बांध बनाए, तटबंध खड़े किए, नदियों का रास्ता नियंत्रित करने की कोशिश की, मौसम की भविष्यवाणी करने वाली आधुनिक प्रणालियां विकसित कीं और आपदा प्रबंधन के लिए विशेष बल तैयार किए। इसके बावजूद जब नदियां अपने उफान पर आती हैं तो प्रकृति के सामने हमारी सारी व्यवस्थाओं की परीक्षा शुरू हो जाती है। यही कारण है कि बाढ़ को केवल एक प्राकृतिक घटना मानकर उससे निपटना पर्याप्त नहीं है। इसके पीछे नदी क्षेत्र में बढ़ता अतिक्रमण, जल निकासी की कमजोर व्यवस्था, अनियोजित निर्माण, वनों की कमी और बदलता मौसम चक्र भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

प्रयागराज की स्थिति इस समय विशेष चिंता का विषय है। गंगा और यमुना के जलस्तर बढ़ने से नदी के आसपास बसे निचले क्षेत्रों में पानी पहुंचना शुरू हो गया है। कछारी इलाकों में रहने वाले परिवारों के लिए बाढ़ का पानी केवल घरों में घुसने की समस्या नहीं है, बल्कि रोजमर्रा के जीवन को पूरी तरह प्रभावित करने वाला संकट है। घरों में पानी भरने के साथ बिजली, पेयजल, आवागमन और भोजन जैसी बुनियादी जरूरतें भी चुनौती बन जाती हैं। ऐसे समय में राहत शिविरों की व्यवस्था लोगों के लिए बड़ी सहायता साबित होती है। प्रशासन द्वारा राहत शिविर सक्रिय करना और प्रभावित परिवारों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाना जरूरी कदम है। मगर इससे भी अधिक महत्वपूर्ण है कि पानी बढ़ने से पहले ही संवेदनशील क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को समय रहते सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जाए।

उत्तर प्रदेश के ही चित्रकूट में मंदाकिनी नदी का बढ़ा हुआ जलस्तर यह संकेत देता है कि लगातार बारिश का असर छोटी नदियों और जलधाराओं पर भी तेजी से पड़ता है। नदी का जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर जाने पर आसपास के गांवों और आबादी को सतर्क करना प्रशासन की पहली जिम्मेदारी हो जाती है। घोषणा, निगरानी और स्थानीय प्रशासन की सक्रियता ऐसी परिस्थितियों में जान-माल के नुकसान को कम कर सकती है। प्रतापगढ़ में बारिश के दौरान कच्ची दीवार गिरने से मासूम की मौत जैसी घटनाएं बताती हैं कि आपदा का खतरा केवल बाढ़ तक सीमित नहीं है। लगातार बारिश कमजोर मकानों, पुरानी दीवारों और जलभराव वाले क्षेत्रों के लिए भी खतरा पैदा करती है। इसलिए बरसात के मौसम में कमजोर निर्माणों की पहचान और लोगों को पहले से सावधान करना आवश्यक है।

बिहार में स्थिति और व्यापक है। गंगा, गंडक, बागमती, कोसी, बूढ़ी गंडक और पुनपुन जैसी नदियों का जलस्तर बढ़ना राज्य के लिए हर वर्ष बड़ी चुनौती बनता है। बिहार का विशाल भूभाग नदियों और उनकी सहायक धाराओं से प्रभावित होता है। नदियों का उफान केवल एक जिले की समस्या नहीं रहता, बल्कि कई जिलों के गांवों, खेतों और सड़कों पर इसका असर पड़ता है। यही वजह है कि प्रशासन को राहत और बचाव की तैयारियां पहले से रखनी पड़ती हैं। नावों की तैनाती, सामुदायिक रसोई, राशन और पॉलीथीन शीट की व्यवस्था तथा आपदा राहत दलों की मौजूदगी बाढ़ प्रभावित लोगों के लिए तत्काल राहत का आधार बनती है।

एसडीआरएफ और एनडीआरएफ जैसी एजेंसियों की तैनाती ने आपदा प्रबंधन की क्षमता को निश्चित रूप से मजबूत किया है। लेकिन किसी भी आपदा में सरकारी मशीनरी की सफलता केवल बचाव दलों की संख्या से नहीं मापी जा सकती। स्थानीय लोगों की जागरूकता, प्रशासन के साथ उनका सहयोग और समय पर चेतावनी का पालन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। बाढ़ के दौरान नदी और तेज बहाव वाले पानी से दूरी बनाए रखना, अफवाहों पर विश्वास न करना और प्रशासन द्वारा बताए गए सुरक्षित स्थानों पर जाना जीवन की रक्षा के लिए आवश्यक है।

सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि जहां कुछ क्षेत्रों में बारिश आफत बन रही है, वहीं कई इलाकों में किसान बारिश की कमी से परेशान हैं। खेतों में नमी नहीं होने पर फसलों की वृद्धि रुक जाती है। बारिश पर निर्भर किसान के लिए यह स्थिति आर्थिक संकट का रूप ले सकती है। एक तरफ अत्यधिक बारिश खेतों को डुबो देती है और दूसरी तरफ कम बारिश फसलों को सुखा देती है। यही विरोधाभास बताता है कि आज आवश्यकता केवल अधिक बारिश की नहीं, बल्कि बारिश के संतुलित वितरण और जल प्रबंधन की है।

प्रकृति के साथ मनुष्य की सबसे बड़ी भूल शायद यही रही है कि उसने प्राकृतिक संसाधनों को अपने नियंत्रण में मान लिया। नदियों के किनारों पर अतिक्रमण, जलाशयों का सिकुड़ना, वर्षाजल के प्राकृतिक रास्तों का बंद होना और बिना पर्याप्त योजना के शहरी विस्तार ने बारिश के पानी को संकट में बदलने की स्थितियां पैदा की हैं। यदि शहरों में पानी के निकास के रास्ते बाधित होंगे तो सामान्य से अधिक बारिश भी जलभराव पैदा करेगी। इसी तरह यदि नदी के प्राकृतिक क्षेत्र में निर्माण बढ़ेगा तो बाढ़ का असर आबादी तक पहुंचने की आशंका बढ़ती जाएगी। इसलिए आज जरूरत आपदा आने के बाद राहत पहुंचाने से आगे बढ़कर दीर्घकालिक तैयारी की है। नदियों के जलग्रहण क्षेत्रों की रक्षा, वर्षाजल संचयन, तालाबों और पारंपरिक जलस्रोतों का संरक्षण, बाढ़ क्षेत्र का वैज्ञानिक निर्धारण और संवेदनशील बस्तियों की बेहतर योजना समय की मांग है। खेती के क्षेत्र में भी ऐसी फसलों और सिंचाई प्रणालियों को बढ़ावा देना होगा जो बदलते मौसम के जोखिम को कम कर सकें।

आइआइटी संस्थानों में क्यों सुसाइड कर रहे हैं होनहार?

मनोज कुमार अग्रवाल

देश के प्रतिष्ठित आईआईटी व आईआईएम जैसे उच्च शिक्षण संस्थानों में छात्रों की आत्महत्या के मामलों की झड़ी लगी है।एक रिपोर्ट के अनुसार देशभर के आईआईटी में पांच वर्षों में 70 होनहारों ने अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। जबकि जुलाई से शुरू नए सत्र में अब तक आईआईटी में तीन व आईआईएम में एक सुसाइड की वारदात सामने आ चुकी हैं। रिपोर्ट बताती है कि आईआईएससी बंगलूरू में भी 15 दिन में दो छात्रों ने खुदकशी की है।

आपको बता दें कि भारत के प्रमुख तकनीकी संस्थानों में छात्रों द्वारा आत्महत्या के बढ़ते मामले एक बेहद गंभीर और संवेदनशील चिंता का विषय बन चुके हैं। हाल ही में, 22 अगस्त 2026 को आईआईटी दिल्ली के एमएससी भौतिकी के 31 वर्षीय छात्र ऋषिकेश कुमार ने परिसर की एक इमारत से कूदकर अपनी जान दे दी। इस घटना के बाद संस्थान में छात्रों द्वारा बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन किए जा रहे हैं।यह स्थिति केवल एक संस्थान तक सीमित नहीं है, बल्कि देश के कई शीर्ष इंजीनियरिंग परिसरों में मानसिक तनाव और शैक्षणिक दबाव की गहरी समस्याओं को उजागर करती है।हालिया प्रमुख घटनाएं और आंकड़ेआईआईटी दिल्ली ऋषिकेश कुमार की मृत्यु के बाद, छात्रों ने न्याय की मांग को लेकर फ्लैश मार्च निकाला और कक्षाओं का बहिष्कार किया। छात्रों का आरोप है कि ऋषिकेश मानसिक तनाव से गुजर रहे थे और उन्हें प्रशासन से आवश्यक सहयोग व हॉस्टल सुविधा नहीं मिली। पिछले 30 महीनों में इस संस्थान में यह आठवीं आत्महत्या है।वर्ष 2026 की शुरूआत (जनवरी) में पीएचडी स्कॉलर राम स्वरूप ईश्वरम ने आत्महत्या कर ली थी, जिससे पहले दो हफ्तों के भीतर ही परिसर में एक और छात्र जय सिंह मीना की मौत हुई थी। इस संस्थान ने भी पिछले दो वर्षों में कई ऐसी दुखद घटनाएं देखी हैं। अगस्त 2026 में आईआईटी खड़गपुर के भी एक छात्र की परिसर में ऊंचाई से गिरने से मौत हुई। रिपोर्टों के अनुसार, देश के शीर्ष 11 आईआईटी में पिछले 5 सालों में 35 से अधिक छात्रों ने आत्महत्या की है, जिनमें आईआईटी मद्रास, हैदराबाद और दिल्ली सबसे आगे रहे हैं।

विभिन्न जांच समितियों, शिक्षाविदों और स्वयं छात्रों के अनुसार इन आत्महत्याओं के पीछे जो कारण रेखांकित किए गए हैं उनमें शैक्षणिक दबाव कड़ा पाठ्यक्रम, लगातार परीक्षाएं, ग्रेडिंग सिस्टम और असाइनमेंट का अत्यधिक बोझ छात्रों को मानसिक रूप से थका देता है।भविष्य और करियर की चिंता के चलते छात्र छात्राओं में अवसाद घर कर जाता है। प्लेसमेंट न होना, इंटर्नशिप के अवसरों से वंचित होना या रिसर्च प्रोजेक्ट्स में आने वाली अड़चनें छात्रों में भारी अनिश्चितता पैदा करती हैं।सामाजिक अलगाव एक बड़ा कारण है कई छात्र अपने परिवारों से दूर रहने, कड़ी प्रतिस्पर्धा और संवाद की कमी के कारण अकेलेपन और अवसाद का शिकार हो जाते हैं।प्रशासनिक और सुपरवाइजर का व्यवहार भी इन घटनाओं के लिए लिए जिम्मेदार है विशेषकर पीएचडी और मास्टर्स के छात्रों में यह देखा गया है कि गाइड या प्रशासन के कथित असंवेदनशील रवैये या अत्यधिक नियंत्रण के कारण छात्र खुद को असहाय महसूस करते हैं।जातिगत या लैंगिक भेदभाव से भी इस तरह की वारदातों की तादाद कम नहीं हो रही है। कुछ मामलों में वंचित पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों ने भेदभाव या पूर्वाग्रहों का सामना करने की बात भी उठाई है।

आपको बता दें कि आईआईटी दिल्ली में 30 महीनों में आठवें छात्र की आत्महत्या की खबर ने एक बार फिर देश के प्रतिष्ठित शिक्षा संस्थानों के अंदरूनी अस्वस्थता को सामने ला दिया है। यह महज एक व्यक्तिगत त्रासदी नहीं, बल्कि व्यवस्थागत विफलता का प्रतीक है। जब एक संस्थान, जिसे देश की उच्च मेधा को तराशने का केंद्र माना जाता है,वहां आए दिन युवा छात्रों द्वारा सुसाइड की वारदात बेहद संवेदनशील और असामान्य स्थिति का हवाला देती है। इस पर सवाल उठना स्वाभाविक है कि ऐसा आत्मघाती माहौल शिक्षण संस्थानों में कैसे पनप रहा है? कई मामलों में अवसाद, परीक्षा में असफलता का डर और समय रहते काउंसलिंग नहीं मिलना प्रमुख कारण बताए गए हैं। छात्रों का आरोप है कि घटना के बाद प्रशासन का रवैया अक्सर औपचारिक शोक संदेश तक सीमित रह जाता है। एक छात्र की मौत के बाद परिसर सामान्य हो जाता है, जैसे कुछ हुआ ही न हो। यही दोहराव छात्रों में गुस्सा और निराशा पैदा कर रहा है। हालिया घटना के बाद सैकड़ों छात्रों का प्रदर्शन, डीन और एसोसिएट डीन के इस्तीफे की मांग, स्वतंत्र जांच और परिवार को मुआवजे की मांग, ये सब इस गुस्से की अभिव्यक्ति हैं। प्रशासन का दावा है कि काउंसलिंग सेवाएं, २४ घंटे मानसिक स्वास्थ्य सहायता और पाठ्यक्रम में लचीलापन उपलब्ध हैं। यदि ऐसा है तो हालात इतना खराब क्यों बने हैं कि आए दिन छात्र जान दे रहे हैं।

जानकारी के अनुसार सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित राष्ट्रीय टास्क फोर्स भी इस मुद्दे पर काम कर रही है। लेकिन रिपोर्ट और कमेटियां तब तक अनुपयोगी हैं, जब तक उनकी सिफारिशें जमीनी स्तर पर लागू न किया जाए ।

सरकार को इस ओर तत्काल प्रभाव से गंभीरता से कारवाई करनी चाहिए। देश के होनहार छात्र इस तरह जान गंवाने के लिए नहीं है। हर मौत पूरे परिवार को तोड़ देती है वही समाज खासकर उच्च शिक्षण संस्थान की प्रतिष्ठा और गरिमा पर भी सवालिया निशान लगा रहीं हैं। हालांकि बताना जरूरी है कि सरकारी स्तर से संकट को देखते हुए छात्र संगठनों की मांगों के बाद कई कदम उठाए गए हैं। आईआईटी दिल्ली मामले की जांच के लिए दिल्ली उच्च न्यायालय की सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में एक बाहरी समिति का गठन किया गया है, जिसमें एम्स के मनोचिकित्सा विभाग के प्रमुख और छात्र प्रतिनिधि भी शामिल हैं।पाठ्यक्रम में लचीलापन लाया गया है। संस्थानों ने शैक्षणिक भार कम करने, पहले सेमेस्टर में क्रेडिट कम करने और वीकेंड परीक्षाओं को सीमित करने जैसे नीतिगत बदलाव शुरू किए हैं।मानसिक स्वास्थ्य सहायता परिसरों में 24/7 काउंसलिंग हेल्पलाइन, वेलनेस सेंटर और मेंटरशिप प्रोग्राम बढ़ाए जा रहे हैं ताकि समय रहते मानसिक संकट से जूझ रहे छात्रों की पहचान की जा सके।छात्रों और उनके परिजनों का भी कर्तव्य है कि वह अपने परिवार या परिचित छात्र छात्राओं के सम्पर्क में रहें कोई अवसाद या असामान्य बात का आभास मिलते ही संस्थान को अवगत कराएं ताकि समय पर काउंसलिंग कर छात्र को आत्मघाती होने से बचाया जा सके।

(यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

संक्षिप्त समाचार

बलूचिस्तान में पाकिस्तानी सेना के काफिले पर बड़ा हमला, बीएलए का दावा- 25 जवानों को किया ढेर

इस्लामाबाद। बलूचिस्तान में गुरुवार को पाकिस्तानी सेना के काफिले पर बड़ा हमला हुआ। इस हमले की जिम्मेदारी बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी ने ली है। बीएलए ने दावा किया है उन्होंने इस हमले में पाकिस्तानी सेना के 25 जवानों को ढेर किया और सेना की दो गाड़ियों में आग लगा दी। द बलूचिस्तान पोस्ट के मुताबिक, बीएलए के प्रवक्ता ने बताया कि उनके लड़ाकों ने जियारत क्रॉस पर सेना के एक काफिले को निशाना बनाया। उन्होंने गाड़ियों पर हमला किया और उनमें से दो को नष्ट कर दिया, जिनमें सेना का एक ट्रक भी शामिल था। बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी ने शुरुआत में दावा किया था कि हमले में पाकिस्तानी सेना के 18 जवान मारे गए हैं, लेकिन बाद में मरने वालों की संख्या बढ़कर 25 हो गई। बीएलए ने अपने आधिकारिक मीडिया चैनल हक्कल पर इस हमले का 1 मिनट 11 सेकंड का वीडियो ट्रेलर भी जारी किया। संगठन का कहना है कि इसमें जियारत क्रॉस पर हुए हमले के फुटेज दिखाए गए हैं। बीएलए के जारी किए फुटेज में हथियारबंद लड़ाके जलती हुई पाकिस्तानी सैन्य गाड़ियों के पास दिखाई दे रहे हैं। वीडियो में हादसे की जगह पर शव दिखाए गए हैं। इसके साथ ही जब्त किए गए हथियार भी दिख रहे हैं। बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी ने ये ट्रेलर जारी करते हुए लिखा कि अभी पूरा वीडियो आना बाकी है, जो कि बाद में जारी किया जाएगा। बीएलए के बयान के अनुसार, एक अलग घटनाक्रम में, सुराब के हाजिका इलाके में समूह के स्पेशल टैक्टिकल ऑपरेशन्स स्काड ने विस्फोटकों से लदी एक गाड़ी को रिमोट से उड़ा दिया। बीएलए ने दावा किया कि इस हमले में सेना की एक गाड़ी नष्ट हो गई और सात जवान मारे गए।

अटलांटिक महासागर में प्रवासियों की नाव फंसी, 5 की मौत; 44 को बचाया गया

बार्सिलोना, एजेंसी। अटलांटिक महासागर में पश्चिमी अफ़्रीकी देशों के प्रवासियों को ले जा रही एक नौका के मुश्किल में फंसने के बाद कम से कम पांच लोगों की मौत हो गई जबकि कई अन्य लोगों के भी मारे जाने की आशंका है। इस हादसे के बाद 44 लोगों को सुरक्षित बचाकर कैनरी द्वीप लाया गया है। स्पेन की समुद्री बचाव सेवा ने बृहस्पतिवार को बताया कि उसके एक विमान ने बुधवार अपराह्न ग्रैन कैनरिया द्वीप के दक्षिण में लगभग 120 किलोमीटर (74 मील) दूर बहती हुई एक खतरनाक हालत वाली नौका देखी। बचे हुए तीन लोगों को तुरंत हेलीकॉप्टर से द्वीप पर स्थित अस्पताल ले जाया गया। बाकी 41 प्रवासियों को नौका से सुरक्षित बाहर निकाला गया और बृहस्पतिवार तड़के आर्गिनगुइन बंदरगाह पर उतारा गया, जहां रेड क्रॉस ने उनकी देखभाल की। कैनरीज में रेड क्रॉस के प्रवक्ता होजे एंटोनियो रोड्रिगेज वेरोना ने बताया कि बचे हुए सभी लोग पुरुष थे, जिनमें से कुछ नाबालिग थे और वे माली या सेनेगल से आए थे।

भारत के 17 दिन के एयरस्पेस अलर्ट से पाकिस्तान में घबराहट

इस्लामाबाद , एजेंसी। भारत के 17 दिन के एयरस्पेस अलर्ट से पाकिस्तान में घबराहट का माहौल है। इस्लामाबाद ने अपनी सेना को हाई अलर्ट पर रख दिया है। बता दें कि भारत ने 21 सितंबर से 7 अक्टूबर तक के लिए राजस्थान क्षेत्र के पाकिस्तान बॉर्डर पर एयरस्पेस रिजर्व करने के लिए नोटिस टू एयर मिशन्स जारी किया है। जहां सेना का अभ्यास होगा। वहीं इस बीच भारत के नोटैमजारी करते ही इस्लामाबाद में सुरक्षा की तत्काल समीक्षा की जा रही है। इस बीच पाकिस्तान ने सीमा पर चौकसी बढ़ा दी है और किसी भी संभावित खतरे का मुंहतोड़ जवाब देने की चेतावनी दी है। जानकारी के मुताबिक, इसके बाद यह आकलन पाकिस्तान के चीफ ऑफ डिफेंस फोर्सेज के ऑफिस को सौंपा गया। भारतीय वायु सेना द्वारा तय एयरस्पेस एक्टिविटी की तैयारी के बीच पाकिस्तानी सुरक्षा एजेंसियों ने भी भारत-पाकिस्तान सीमा पर निगरानी बढ़ा दी है। भारत का नोटैमदो हफ़्ते से ज़्यादा समय के लिए है और इसने पाकिस्तान के सिक्योरिटी सिस्टम को प्लानड एक्टिविटी की बारीकी से जांच करने के लिए प्रेरित किया है। , सुरक्षा से जुड़े एक सीनियर अधिकारी ने कहा कि पाकिस्तान के रक्षा अधिकारी इस नोटिफिकेशन को फौरन आकलन की ज़रूरत वाले मामले के तौर पर देख रहे हैं। नतीजतन, सीमा पर सुरक्षा बलों को हाई अलर्ट पर रखा गया है।

स्टाइनम ने गांधी से प्रेरणा ले अमेरिका में छेड़ा था आंदोलन; भारत में पदयात्रा से बदली थी सोच

कैथरीन क्यू सीली, एजेंसी। पूरी दुनिया में चर्चित नारीवादी कार्यकर्ता ग्लोरिया स्टाइनम का बुधवार को 92 साल की उम्र में निधन हो गया। कम ही लोगों को पता होगा कि अमेरिका में महिला मुक्ति आंदोलन का प्रमुख चेहरा रही ग्लोरिया को इसकी प्रेरणा महात्मा गांधी से मिली थीं। वह 1957 में भारत आई थीं और गांधी के अनुयायियों के साथ दक्षिण भारत में पदयात्राओं का हिस्सा रही थीं।

स्टाइनम उस समय कॉलेज के आखिरी वर्ष में थीं और अपने प्रेमी के साथ शादी करने की योजना बना रही थीं। बाद में उन्हें लगा कि वह शायद इसलिए शादी के बंधन में बंध रही हैं और बच्चा पैदा करना चाहती हैं क्योंकि समाज महिलाओं से यही अपेक्षा करता है। उन्हें विवाह एक शुरुआत नहीं, आजादी के अंत जैसा लगा। बस फिर क्या था, उन्होंने सगाई की अंगूठी अपने मंगेतर के तकिये के नीचे रख दी और भारत के सफर पर रवाना हो गईं।

पदयात्रा कर जमीनी हकीकत जानी : वह स्वतंत्रता के केवल एक दशक बाद महात्मा गांधी की विरासत से आकर्षित होकर भारत की ओर खिंची चली आई थीं। उन्होंने अध्ययन के लिए चेस्टर बोउल्स एशियाई फेलोशिप जीती थी लेकिन जल्द ही अपनी कक्षाएं छोड़ दीं। एक साड़ी पहनकर और केवल एक तौलिया, एक कप और एक कंघी लेकर गांधीजी के अनुयायियों के साथ

दक्षिणी भारत में पदयात्रा पर निकल पड़ीं। यहीं, उन्होंने जमीनी स्तर पर संगठन के बारे में सबक सीखे और आगे चलकर अमेरिका में महिला मुक्ति आंदोलन शुरू किया।

प्लेबॉय क्लब में काम कर महिलाओं की दुर्दशा जानी : अमेरिका लौटने के बाद ग्लोरिया ने मैसाचुसेट्स में एक एनजीओ के लिए काम किया। बतौर पत्रकार भी सक्रिय रहीं। वर्ष 1963 में न्यूयॉर्क के प्लेबॉय क्लब में एक अंडरकवर वेट्रेस के रूप में काम किया ताकि महिलाओं की स्थिति को करीब से जान सकें।

रिपोर्ट ने मचा दिया तहलका... : उन्होंने करीब दो हफ्ते तक क्लब में यह काम शो पत्रिका के लिए किया। इसके बाद उनकी जो रिपोर्ट छपी उसने पूरी दुनिया में तहलका मचा दिया। उस दौर में जब महिलाओं को गंभीर पत्रकार या पेशेवर नहीं बल्कि केवल खूबसूरत शो-पीस माना जाता था, ग्लोरिया ने उस कड़वी सच्चाई को दुनिया के सामने रखा, जिसे समाज हमेशा दबाए रहता था।

अंतिम समय तक रहीं सक्रिय : 25 मार्च 1934 को टोलेडो, ओहायो में जन्म। 10 वर्ष की आयु में माता-पिता के तलाक के बाद मानसिक रूप से अस्वस्थ मां की देखभाल की जिम्मेदारी संभाली। 1968 में न्यूयॉर्क पत्रिका की सह-संस्थापक बनीं और मासिक राजनीतिक कॉलम द सिटी पॉलिटिक शुरू कर बेबाक राय रखनी शुरू की। 1972 में पूरी तरह महिलाओं के स्वामित्व वाली और संचालित पहली राष्ट्रीय पत्रिका मिस की सह-स्थापना की, जिसने गर्भपात, घरेलू हिंसा जैसे मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर उठाया। 90 वर्ष की उम्र तक निबंध लिखने, व्याख्यान देने में सक्रिय रही और महिलाओं के मुद्दे उठाती रहीं।

अमेरिका में ग्रीन कार्ड की उम्मीदों को झटका, खाड़ी संकट ने भी बढ़ाई चिंता

वाशिंगटन/दुबई, एजेंसी। अमेरिका में ग्रीन कार्ड के इच्छुक भारतीयों की दिक्कतें और बढ़ सकती हैं। अमेरिकी विदेश विभाग ने चेतावनी दी कि भारतीय नागरिकों के लिए रोजगार आधारित प्रथम प्राथमिकता (ईबी-1) ग्रीन कार्ड आने वाले हफ्तों में अस्थायी रूप से अनुपलब्ध हो सकते हैं। विभाग के सितंबर वीजा बुलेटिन के अनुसार, भारी मांग के चलते अमेरिकी वित्त वर्ष के 30 सितंबर को समाप्त होने से पहले भारत का तय कोटा खत्म हो सकता है। हालांकि विभाग ने कहा है कि वह वीजा उपलब्धता की स्थिति पर लगातार नजर रख रहा है। जरूरत पड़ने पर वीजा संख्या और तारीखों में उचित बदलाव किए जाएंगे। ईबी-1 श्रेणी असाधारण प्रतिभा वाले पेशेवरों, प्रसिद्ध शोधकर्ताओं, प्रोफेसरों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के अधिकारियों के लिए होती है। अत्यधिक मांग के चलते सितंबर के लिए ईबी-1 भारत की अंतिम कार्रवाई तिथि 15 अक्तूबर, 2022 तय की गई है। इसका मतलब है कि सामान्य तौर पर उन्हीं भारतीय आवेदकों के मामलों में अंतिम कार्रवाई हो सकती है जिनकी प्राथमिकता तारीख 15 अक्तूबर 2022 से पहले की है। खाड़ी क्षेत्र में एक बार फिर पूर्ण युद्ध जैसे हालात हैं। एक माह शांति के बाद अमेरिका-ईरान संघर्ष का ताजा, खतरनाक दौर भारतीयों के लिए संकट लाया है। इसके सीधे असर से यूएई, बहरीन, कुवैत, कतर व सऊदी के करीब 90 लाख भारतीय प्रवासी चिंता में हैं। अमेरिका ने पश्चिम एशियाई देशों के लिए दूसरी सबसे ऊंची श्रेणी की चेतावनी जारी की है। यूरोपीय विमानन सुरक्षा एजेंसी ने भी फारस व ओमान की खाड़ी के लिए चेतावनी 30 सितंबर तक बढ़ा दी है। ये सारे डेवलपमेंट बेहद गंभीर हैं।

डिलीवरी के ऑपरेशन में नहीं मिला बच्चा, सच्चाई जानकर सब रह गए हैरान

कराची , एजेंसी। पाकिस्तान के कराची के एक अस्पताल में गर्भावस्था से जुड़ा हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहां 9 महीने की गर्भवती महिला की डिलीवरी के लिए ऑपरेशन किया गया, लेकिन सर्जरी के दौरान उसके पेट में बच्चा ही नहीं मिला। हैरानी की बात यह है कि अल्ट्रासाउंड रिपोर्ट में महिला की करीब 38 हफ्ते की प्रेग्नेंसी बताई गई थी। मामला सामने आने के बाद परिवार ने अस्पताल पर गंभीर आरोप लगाए हैं। हालांकि, इस घटना ने एक अहम सवाल खड़ा कर दिया है कि आखिर डिलीवरी के ऑपरेशन से पहले डॉक्टर किन जांचों और क्लिनिकल चेकअप के जरिए यह पुष्टि करते हैं कि महिला वास्तव में गर्भवती है और गर्भ में बच्चा सुरक्षित है।

रिपोर्ट के मुताबिक, पुलिस जांच में सामने आया कि महिला ने अपनी प्रेग्नेंसी की फर्जी अल्ट्रासाउंड रिपोर्ट तैयार करवाई थी। जांच में यह भी पता चला कि महिला वास्तव में गर्भवती नहीं थी। बताया गया कि परिवार की ओर से उस पर बच्चा कंसीव करने का दबाव था, जिसके चलते उसने कथित तौर पर यह फर्जी रिपोर्ट बनवाई।

डिलीवरी से पहले कौन-कौन सी जांच जरूरी : गुरुग्राम स्थित फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट के प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग की डायरेक्टर डॉ. नूपुर गुप्ता के मुताबिक, जब कोई महिला डिलीवरी के लिए अस्पताल पहुंचती है तो डॉक्टर सबसे पहले उसकी पिछली मेडिकल रिपोर्ट और

अल्ट्रासाउंड रिपोर्ट देखते हैं। डॉक्टर यह पता करते हैं कि गर्भावस्था कितने सप्ताह की है, गर्भ में बच्चे की स्थिति क्या है और बच्चे की हार्टबीट कैसी है। अगर पुरानी मेडिकल रिपोर्ट उपलब्ध नहीं हैं या बच्चे की स्थिति को लेकर किसी तरह का संदेह है, तो महिला की स्थिति के अनुसार जरूरी जांच कराई जाती है।

जरूरत पड़ने पर डिलीवरी से पहले उसी समय अल्ट्रासाउंड भी किया जा सकता है। खासकर तब, जब डॉक्टर को बच्चे की पोजिशन, प्लेसेंटा या गर्भावस्था की स्थिति को लेकर कोई चिंता हो। पाकिस्तान के मामले में सबसे बड़ा सवाल यही है कि अगर महिला वास्तव में गर्भवती नहीं थी, तो केवल पुरानी अल्ट्रासाउंड रिपोर्ट के आधार पर उसका ऑपरेशन कैसे कर दिया गया? डॉ. नूपुर गुप्ता के अनुसार, गर्भावस्था के आखिरी महीनों में बच्चे की स्थिति और उसकी सेहत का आकलन करने के लिए सिर्फ एक पुराना अल्ट्रासाउंड पर्याप्त नहीं माना जाता।

'ईरान के मुकाबले चीन ज्यादा जिम्मेदार', अमेरिकी उपराष्ट्रपति वेंस ने कही ये बात

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने कहा है कि ईरान को आर्थिक रूप से अलग-थलग करने के लिए चीन भी अमेरिका का सहयोग करने के लिए तैयार है। उन्होंने ईरान की तुलना में चीन को ज्यादा जिम्मेदार देश भी बताया। अमेरिका ने ईरान पर आर्थिक रूप से दबाव बनाने के लिए 'ऑपरेशन इकोनॉमिक आउटकास्ट' शुरू किया है। जिस पर सवाल उठ रहे हैं कि चीन की मदद के बिना ये अभियान सफल नहीं हो सकता। जब इसे लेकर वेंस से सवाल किया गया तो उन्होंने कहा कि चीन भी मदद के लिए तैयार है। वेंस ने मीडिया से बात करते हुए कहा, 'मुझे लगता है कि चीन सरकार, इस मामले में सहयोग के लिए तैयार है।' हालांकि वेंस ने स्वीकार किया कि अमेरिका और चीन के बीच कुछ नीतिगत मतभेद हैं, लेकिन चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच अच्छे संबंध हैं। वेंस ने कहा, 'चीन के बारे में जो कहें, लेकिन वे उस तरह के देश नहीं हैं कि किसी अंतरराष्ट्रीय विवाद में अपनी बात मनवाने के लिए वाणिज्यिक जहाजों पर गोलीबारी करते रहें।' जेडी वेंस ने बताया कि तुर्किये, अजरबैजान, संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, कतर और अन्य खाड़ी देशों सहित कई अन्य देश भी अमेरिका की मदद करने के लिए कदम उठा रहे हैं। अमेरिकी उपराष्ट्रपति ने कहा, 'कई देश, कभी-कभी सार्वजनिक रूप से कुछ कहने के लिए तैयार नहीं होते हैं, लेकिन निजी तौर पर वे वाणिज्यिक जहाजों पर गोलीबारी करने के लिए ईरान को सबक सिखाना चाहते हैं और इस वजह से वे हमारी मदद भी कर रहे हैं।' अमेरिकी उपराष्ट्रपति ने कहा कि ट्रंप प्रशासन के पास ईरान से निपटने के लिए आर्थिक, सैन्य, राजनयिक और गुप्त उपायों समेत कई विकल्प मौजूद हैं। वेंस का यह बयान ऐसे समय सामने आया है, जब पश्चिम एशिया में तनाव लगातार बढ़ रहा है। वेंस ने कहा कि ईरान पर दबाव बनाने की हम अपनी योजनाओं का खुलासा नहीं करेंगे क्योंकि इससे अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की फैसला लेने की क्षमता सीमित हो जाएगी।

100 साल से केन्या में थी टाटा की कंपनी, अब राष्ट्रपति ने कामकाज बंद करने का दिया आदेश

नैरोबी, एजेंसी। केन्या के राष्ट्रपति विलियम रुटो ने काजीआडो के लेक मगाडी में काम कर रही भारतीय कंपनी टाटा केमिकल्स को अपना काम तुरंत रोकने का आदेश दिया है। राष्ट्रपति ने कंपनी पर आरोप लगाया है कि एक सदी से भी अधिक समय से इस क्षेत्र में काम करने के बावजूद वह पर्याप्त निवेश, नौकरियां और औद्योगिक विकास लाने में विफल रही है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि सरकार टाटा केमिकल्स की जगह नए निवेशकों को लाएगी, जिनसे देश में ही विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) सुविधाएं स्थापित करने को कहा जाएगा।

क्या हम दूसरों के गुलाम हैं : एक विकास दौरे के दौरान जनसभा को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति रुटो ने कहा, उस टाटा कंपनी के पास यह अनुबंध 100 वर्षों से था, लेकिन उन्होंने काजीआडो में कोई फैक्टरी या ढांचा खड़ा नहीं किया।

उन्होंने जनता से तीखा सवाल पूछा, क्या हम दूसरे लोगों के गुलाम हैं?। राष्ट्रपति ने जोर देकर कहा कि केन्या की प्राकृतिक संपत्ति का लाभ सबसे पहले केन्याई लोगों को मिलना चाहिए और संसाधनों को सिर्फ निकालकर प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग) के लिए बाहर नहीं भेजा जाना चाहिए। सरकार का मानना है कि स्थानीय स्तर पर प्रसंस्करण होने से औद्योगिक विकास, रोजगार और कर राजस्व को बढ़ावा मिलेगा।

1911 से चल रहा था परिचालन : टाटा केमिकल्स का काम इस साल जुलाई के अंत में ही निलंबित करने का सरकारी निर्देश दिया गया था, जिसके बाद मगाडी सोडा फैक्टरी का परिचालन और सोडा ऐश का निर्यात रोक दिया गया था। टाटा केमिकल्स ने साल 2005 में इस कंपनी का अधिग्रहण किया था, जबकि यह व्यवसाय 1911 से मगाडी सोडा कंपनी के रूप में चल रहा था। यहां से सालाना 3.5 लाख टन से अधिक सोडा ऐश भारत, दक्षिण-पूर्वी एशिया और मध्य पूर्व के देशों में निर्यात की जाती थी, जिसका उपयोग कांच, डिटर्जेंट, रसायनों और जल शोधन में होता है।

विपक्ष ने उठाए राष्ट्रपति की नीयत पर सवाल : इस बीच, केन्या की विपक्षी पार्टी डेमोक्रेसी फॉर द सिटीजन्स पार्टी (डीसीपी) ने इस फैसले की कड़ी आलोचना की है। विपक्ष ने इसे राज्य प्रायोजित आर्थिक तोड़फोड़ करार देते हुए आरोप लगाया है कि टाटा केमिकल्स को बंद कराने के पीछे राष्ट्रपति रुटो के अपने निजी व्यापारिक हित जुड़े हो सकते हैं। डीसीपी का दावा है कि मगाडी क्षेत्र के नीचे खरबों शिलिंग मूल्य के लिथियम धातु के विशाल भंडार और तेल की भारी संभावनाएं हैं। विपक्ष का आरोप है कि रुटो टाटा को हटाकर अन्य हितों को बढ़ावा देना चाहते हैं। उन्होंने चेतावनी दी है कि इस फैसले से 1 लाख से अधिक लोगों की आजीविका प्रभावित होगी और नैरोबी में पेयजल शोधन के लिए सोडा ऐश की आपूर्ति बाधित हो सकती है। केन्या के खनन कैबिनेट सचिव हसन जोहो ने आरोप लगाया है कि मंत्रालय ने वर्षों तक कंपनी के साथ जुड़ने का प्रयास किया, लेकिन कंपनी ने नियमों का पालन नहीं किया। अब इस पूरे विवाद और खनन कार्यों को दोबारा शुरू करने की संभावना से जुड़ी एक याचिका पर 18 नवंबर को केन्या की हाईकोर्ट में सुनवाई होगी।

पाकिस्तान में सच बोलने पर सिख पत्रकार का करियर तबाह, एंकर हरमीत सिंह को बेबाक कवरेज की मिल रही सजा

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के सिख पत्रकार और टीवी एंकर हरमीत सिंह ने दावा किया है कि स्वतंत्र और बेबाक पत्रकारिता के कारण उन्हें लगातार निशाना बनाया गया। उनका आरोप है कि पहले उन्हें टीवी स्क्रीन से हटाया गया और बाद में राजनीतिक विश्लेषक के तौर पर अलग-अलग चैनलों पर आने से भी रोक दिया गया। हरमीत ने अपने छोटे मीडिया कार्यालय पर पुलिस कार्रवाई और उपकरण जब्त किए जाने का भी दावा किया है। हरमीत सिंह के मुताबिक, वह पाकिस्तान के सिख समुदाय से मुख्यधारा के मीडिया में पहुंचने वाले शुरुआती पत्रकारों में से एक हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर

एक संदेश में कहा कि एक हाशिये पर रहने वाले समुदाय से निकलकर मुख्यधारा की पत्रकारिता तक पहुंचना आसान नहीं था। उनके समुदाय के कुछ लोग उनसे यह सवाल भी करते थे कि वह पत्रकारिता में क्यों बने हुए हैं, कोई दूसरा पेशा या कारोबार क्यों नहीं करते। हरमीत ने दावा किया कि परेशानी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ की कवरेज के बाद शुरू हुई। उनके अनुसार, नवंबर 2024 में उनकी कवरेज के बाद उनके खिलाफ कार्रवाई शुरू की गई। उन्होंने बताया कि उनके खिलाफ मामले दर्ज किए गए, जिनमें इस्लामाबाद में स्न्ढ्ढक्रऔर पेशावर में शुरू की गई जांच भी शामिल है।

उनके अनुसार, मामला अदालत में विचाराधीन है। हरमीत ने यह भी आरोप लगाया कि पुलिस ने उनके छोटे मीडिया कार्यालय पर छापा मारा और वहां से कंप्यूटर, कैमरे, माइक्रोफोन और अन्य उपकरण जब्त कर लिए। हरमीत सिंह ने अपने ऊपर लगे किसी भी देश-विरोधी या प्रचार से जुड़े आरोप को खारिज किया। उनका कहना है कि उनकी पत्रकारिता का फोकस लोकतंत्र, संविधान की सर्वोच्चता और आम नागरिकों की समस्याओं पर रहा है। उन्होंने कहा कि उनका नजरिया दूसरों से अलग हो सकता है और शायद यही उनके लिए समस्या बन गया। साथ ही उन्होंने स्पष्ट किया कि उन्होंने कभी पाकिस्तान के खिलाफ काम नहीं किया और न ही अपने देश के खिलाफ किसी तरह के प्रचार में हिस्सा लिया। सिख बुद्धिजीवी अवतार सिंह ने इस मामले पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि किसी सिख पत्रकार के कार्यालय पर कथित तौर पर छापा मारना और स्वतंत्र रूप से पत्रकारिता करने के कारण कार्रवाई किया जाना दुर्भाग्यपूर्ण है।

बांग्लादेश के पीएम तारिक ने जन्माष्टमी की दी बधाई, शेख हसीना को बताया कंस

ढाका , एजेंसी। बांग्लादेश के प्रधानमंत्री तारिक रहमान ने जन्माष्टमी के मौके पर आयोजित एक कार्यक्रम में पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना पर बिना नाम लिए तीखा हमला बोला। उन्होंने बांग्लादेश की पिछली सरकार की तुलना मथुरा के राजा कंस से करते हुए कहा कि कंस जैसा क्रूर शासन करीब डेढ़ दशक तक देश में चला और लोगों को उनके लोकतांत्रिक अधिकारों से वंचित रखा गया। ढाका में आयोजित जन्माष्टमी समारोह में तारिक रहमान ने हिंदू समुदाय के लोगों और पुजारियों से मुलाकात की। उन्होंने देश और दुनिया भर के हिंदुओं को जन्माष्टमी की शुभकामनाएं भी दीं। कार्यक्रम में भगवान कृष्ण के जन्म की कथा का उल्लेख करते हुए तारिक रहमान ने कहा कि करीब 5,000 साल पहले मथुरा में अत्याचारी राजा कंस का शासन था। हिंदू मान्यता के अनुसार, भगवान कृष्ण ने कंस का अंत कर बुराई पर अच्छाई की जीत स्थापित की। इसके बाद उन्होंने इसी कथा को बांग्लादेश की राजनीति से जोड़ दिया। तारिक रहमान ने कहा कि बांग्लादेश में भी कंस जैसा शासक डेढ़ दशक तक सत्ता में रहा और लोगों को उनके लोकतांत्रिक अधिकारों से दूर रखा। उन्होंने दावा किया कि अलग-अलग राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि के लोग एकजुट हुए और उन्होंने कंस जैसे फासीवादी शासन को सत्ता से हटाने के लिए बलिदान दिया। हालांकि, अपने संबोधन में उन्होंने शेख हसीना का नाम सीधे तौर पर नहीं लिया। तारिक रहमान ने कहा कि वह बांग्लादेश और दुनिया भर के सभी हिंदुओं तथा सनातन धर्म को मानने वाले लोगों को जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं देते हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, यह कार्यक्रम बांग्लादेश सरकार के धार्मिक मामलों के मंत्रालय और हिंदू धार्मिक कल्याण ट्रस्ट की ओर से आयोजित किया

गया था। कार्यक्रम में तारिक रहमान विशिष्ट अतिथि के तौर पर शामिल हुए। उन्होंने हिंदू पुजारियों से मुलाकात की और समुदाय के कुछ लोगों को सम्मान राशि भी वितरित की। तारिक रहमान ने दावा किया कि बांग्लादेश अब दोबारा लोकतंत्र की दिशा में आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि देश के सामने अब अर्थव्यवस्था में सुधार, निष्पक्ष प्रशासन और कानून-व्यवस्था को बेहतर बनाने की चुनौती है। उन्होंने कहा कि अब बांग्लादेश के पुनर्निर्माण का समय है। बांग्लादेश में 5 अगस्त 2024 को बड़े राजनीतिक घटनाक्रम के बाद शेख हसीना को प्रधानमंत्री पद छोड़ना पड़ा था। इसके बाद वह भारत आ गईं।

उनकी सरकार के पतन के बाद नोबेल पुरस्कार विजेता मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व में अंतरिम सरकार बनी। बाद में शेख हसीना की पार्टी आवामी लीग पर प्रतिबंध लगाया गया। हसीना के भारत में रहने और वहां से दिए गए राजनीतिक बयानों के कारण ढाका और नई दिल्ली के संबंधों में भी तनाव देखने को मिला। इसके बाद बांग्लादेश में हुए आम चुनाव में बीएनपी को बहुमत मिला और लंबे समय तक निर्वासन में रहने के बाद तारिक रहमान की सत्ता में वापसी हुई। सत्ता में लौटने के बाद बांग्लादेश की सरकार लगातार भारत से शेख हसीना के प्रत्यर्पण की मांग करती रही है। हसीना के खिलाफ बांग्लादेश में कई कानूनी मामले भी चल रहे हैं।

चीन में शख्स ने शुरू किया खुजली मिटाने का बिजनेस, हर महीने कमा रहा 14 लाख; मार्केट में भारी डिमांड

बीजिंग, एजेंसी। चीन के एक 32 साल के युवा एंटरप्रेन्योर ने एक बेहद आम सी समस्या को एक अनोखे और कामयाब बिजनेस आइडिया में बदल दिया है। अब लोग अपनी पीठ या शरीर के अन्य हिस्सों की खुजली शांत करने के लिए प्रोफेशनल मदद ले सकते हैं। हुबेई प्रांत के रहने वाले झांग शियाओकियाओ ने शेनझेन शहर में सुमा ब्रांड नाम से इस अनूठी सर्विस की शुरुआत की है।

साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट के मुताबिक, इस थेरेपी का माहौल बिल्कुल किसी लग्जरी मसाज पार्लर जैसा होता है। यहां ग्राहक आराम से बेड पर लेटते हैं और ट्रेंड स्टाफ उनके शरीर को सहलाता है। इसके लिए प्रशिक्षित स्टाफ खास तौर पर डिजाइन किए गए नुकीले नाखूनों का इस्तेमाल करके उनके शरीर के अलग-अलग हिस्सों को धीरे-धीरे खुजलाते हैं।

प्रति घंटे मोटी रकम खर्च कर रहे लोग : इस अनोखी सर्विस की कीमत लगभग 4,200 रुपये प्रति घंटा है। इसे केवल खुजली मिटाने तक सीमित नहीं रखा गया है, बल्कि इसे आराम करने, तनाव कम करने और बेहतर नींद के एक तरीके के तौर पर प्रमोट किया जा रहा है।

ग्राहक अपनी सुविधानुसार स्टाफ को भी बता सकते हैं कि शरीर के किस हिस्से में ज्यादा खुजली हो रही है, ताकि वे उन जगहों पर अधिक ध्यान दे सकें। कई बार इस एहसास से ग्राहकों को गुदगुदी भी होती है और वे हंसने लगते हैं। झांग बताते हैं कि बड़े शहरों में लोग अक्सर बहुत ज्यादा तनाव महसूस करते हैं। इसी वजह से इस सर्विस की मांग तेजी से बढ़ रही है।

14 लाख रुपये महीने की कमाई : झांग ने मई में शेनझेन के बाओआन जिले में अपना पहला आउटलेट खोला था और सफलता को देखते हुए एक महीने बाद फुटियान जिले में दूसरी ब्रांच भी खोल दी। खबरों के मुताबिक, दोनों स्टोर मिलकर हर महीने करीब 14 लाख रुपये की कुल कमाई कर रहे हैं और ब्रेक-ईवन पॉइंट तक पहुंच चुके हैं।

झांग ने आगे बताया कि हम पुरुष और महिला, दोनों तरह के ग्राहकों को सर्विस देते हैं, जिनमें से लगभग 70 प्रतिशत पुरुष हैं।

कुछ ग्राहकों का मानना है कि हमारी सर्विस पारंपरिक मसाज से भी ज्यादा आरामदायक है। इसी वजह से हमारे पास बार-बार आने वाले नियमित ग्राहकों का एक मजबूत आधार बन गया है।

कहां से मिला आइडिया : यह अनोखा आइडिया सोशल मीडिया और बचपन की यादों के दिलचस्प मेल से पैदा हुआ। पिछले साल, झांग ने इंटरनेट पर एक छोटा सा वीडियो देखा जिसमें एक महिला अपने पति की पीठ खुजला रही थी। वीडियो पर आए कमेंट्स ने उनका ध्यान खींचा, कई लोगों ने लिखा था कि वे अपनी खुजली मिटाने के लिए किसी को खुशी-खुशी पैसे देने को तैयार हैं। इस घटना ने झांग को उनके बचपन की याद दिला दी, जब उनके पिता अक्सर उन्हें सुलाने के लिए प्यार से उनकी पीठ खुजलाया करते थे। इसी के बाद उन्होंने सोचा कि क्या आराम देने वाले इस साधारण से काम को एक पेशेवर सर्विस में बदला जा सकता है।

खुद डेवलप किया खुजलाने का तरीका : चूंकि चीन में पेशेवर तौर पर खुजली मिटाने वाले बिजनेस का कोई स्थापित उदाहरण नहीं था, इसलिए झांग को सर्विस खुद ही डिजाइन करनी पड़ी। उन्होंने अलग-अलग तरीकों का परीक्षण किया और यह पता लगाया कि ग्राहकों के लिए इस अनुभव को सबसे ज्यादा आरामदायक कैसे बनाया जा सकता है। यह स्टार्टअप झांग के पिछले करियर से बिल्कुल अलग है। ग्रेजुएशन के बाद, उन्होंने एक साल में सात अलग-अलग नौकरियां की थीं। बाद में सोशल मीडिया इंडस्ट्री में आने से पहले उन्होंने दो क्रॉस-बॉर्डर ई-कॉमर्स कंपनियाँ भी शुरू की थीं, लेकिन उन्हें वैसी कामयाबी नहीं मिली जैसी उम्मीद थी।

100 आउटलेट खोलने का लक्ष्य : अब उनका यह अनोखा आइडिया लोगों के बीच काफी लोकप्रिय हो रहा है। ऑनलाइन भी इस बिजनेस ने उत्सुकता पैदा की है और लोग मजाक में इस बात पर बहस कर रहे हैं कि क्या प्रोफेशनल खुजली मिटाना सच में एक मान्यता प्राप्त पेशा बन सकता है। आने वाले समय में पूरे चीन में सुमा के 100 आउटलेट खोलेंगे और इस अनोखे काम को एक व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त सर्विस प्रोफेशन में बदल देंगे।

'रनों और टनों से भरे साल की शुभकामनाएं'

युवराज सिंह ने अभिषेक शर्मा को जन्मदिन की बधाई दी

नई दिल्ली । पूर्व भारतीय क्रिकेटर युवराज सिंह ने शुक्रवार को अपने अभिषेक शर्मा को उनके 26वें जन्मदिन पर खास शुभकामनाएं दीं। अभिषेक शर्मा को एक विस्फोटक बल्लेबाज बनाने में युवराज सिंह का मार्गदर्शक के रूप में अहम योगदान रहा है। युवराज ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो साझा करते हुए अभिषेक को जन्मदिन की बधाई दी। युवराज ने लिखा, 'सर अभिषेक, यह आपका जन्मदिन है। कितना शुभ दिन है। आप जैसे बन गए हैं, उससे प्यार करें - अपने आस-पास के लोगों के साथ शेयरिंग और केयरिंग, और एक लीडर। हमेशा अपनी नाकामियों से सीखते हैं और हर बार और ज्यादा मेहनत करने को तैयार रहते हैं। आपको रनों और टनों से भरे साल की शुभकामनाएं। हमेशा ढेर सारा प्यार।' वीडियो में युवराज और अभिषेक से रैश शॉट न खेलने के लिए कहते और उसकी गलतियों के लिए उससे सिट-अप करवाते हुए देखे जा सकते हैं। युवराज को यह कहते हुए सुना जा सकता है, 'बोल मैं पहली बॉल ते लप्पा नहीं मारूंगा। अभिषेक सिट-अप्स में कान पकड़ते हैं और कहते हैं कि मैं पहली बॉल ते लप्पा नहीं मारूंगा। ' वीडियो में दोनों के बीच करीबी रिश्ते को भी दिखाया गया है, जिसमें युवराज के कुछ हल्के-फुल्के मजाक भी हैं। इसमें युवराज, अभिषेक और संजू सैमसन को स्टैंड से विंबलडन इवेंट में शामिल होते हुए भी दिखाया गया है। साझा वीडियो में युवराज ने अभिषेक से पूछा, 'आपको क्या चाहिए?' अभिषेक ने कहा, 'आपका आशीर्वाद,' इस पर युवराज ने कहा, 'हमेशा। '

बेन शेल्टन ने शापोवालोव को और टियाफो ने वचेरोट को हराकर

चौथे राउंड में जगह बनाई

न्यूयॉर्क । बेन शेल्टन ने डेनिस शापोवालोव को 3 घंटे 22 मिनट तक चले मुकाबले में हराकर यूएस ओपन 2026 के पुरुष एकल के चौथे राउंड में जगह बना ली है। शेल्टन ने शापोवालोव को 7-6(3), 6-7(5), 6-2, 6-4 से हराया।23 साल के अमेरिकी खिलाड़ी दूसरे सेट में दो बार सर्व नहीं कर पाए, जिससे शापोवालोव को वापसी करने का मौका मिला और फिर टाईब्रेक जीतकर मैच बराबर कर दिया। इस हार से शेल्टन पर कोई खास असर नहीं पड़ा। उन्होंने तीसरे सेट में और ज्यादा आक्रामक तरीके से वापसी की और कनाडाई खिलाड़ी का स्तर गिरते ही फायदा उठाया। एक तेज रिटर्न विनर ने लाइन को पार करते हुए शेल्टन को चौथे राउंड की शुरुआत में ही ब्रेक करने में मदद की, और उन्होंने मुकाबला खत्म करने तक अपनी बढ़त बनाए रखी। इस जीत ने लेक्सस एटीपी हेड टू हेड राइवलरी में शापोवालोव पर शेल्टन के दबदबे को 5-0 कर दिया। उन्हें चौथे राउंड में स्टेफानोस सिटसिपास के साथ मुकाबला मिला है।

पूर्व वर्ल्ड नंबर 3 ने 18वीं सीड जिरी लेहेका को 2-6, 6-1, 7-6(3), 6-1 से हराकर अपनी वापसी की। दो बार के ग्रैंड स्लैम फाइनलिस्ट सिटसिपास ने पहले 10वीं सीड आर्थर फिल्स को हराया था और अब वह टूर्नामेंट में नौ बार खेलने के बाद पहली बार यूएस ओपन के चौथे राउंड में पहुंचे हैं।

टियाफो ने लुइस आर्मस्ट्रांग स्टेडियम में लाइट्स के नीचे 1 घंटे 59 मिनट में वैलेंटिन वचेरोट को 6-4, 6-2, 6-4 से हराया। 11वें सीड खिलाड़ी ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया, सिर्फ 13 अनफोर्स्ड गलतियों के मुकाबले 30 विनर लगाए और अपने पहले सर्व पॉइंट्स का 85 प्रतिशत जीता। इस नतीजे के साथ वह यूएस ओपन के चौथे राउंड में छठी बार पहुंचे। सीजन की यह उनकी 40वीं टूर-लेवल जीत थी। टियाफो अब अलेक्जेंडर ज्वेरेव और जैनिक सिनर के साथ 2026 में कम से कम 40 टूर-लेवल जीत वाले अकेले खिलाड़ी बन गए हैं। टियाफो का अगले दौर में सामना मेदवेदेव से होगा। मेदवेदेव आर्थर रिंडरकनेच को 6-4, 6-4, 6-4 से हराकर चौथे राउंड में पहुंचे हैं।

श्री चरणी ने दीप्ति शर्मा को पीछे छोड़ा

खतरे में पूनम यादव का रिकॉर्ड

नई दिल्ली । भारतीय महिला क्रिकेट टीम दुबई में खेले जा रहे एशिया कप में बेहतरीन प्रदर्शन कर रही है। लगातार 2 मैच जीतकर भारतीय टीम ने सेमीफाइनल में जगह बना ली है। ग्रुप स्टेज में टीम इंडिया को पाकिस्तान के खिलाफ एक और मैच खेलना है। गुरुवार को भारतीय टीम ने हांगकांग को 137 रनों से हराया। इस मैच में स्मृति मंधाना के विस्फोटक शतक के साथ ही श्री चरणी ने भी अपनी गेंदबाजी के खास उपलब्धि हासिल की। भारतीय टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 5 विकेट पर 193 रन बनाए थे। हांगकांग 16.2 ओवर में 56 रन पर सिमट गई और 137 रन से हार गई। हांगकांग को 56 पर समेटने में श्री चरणी का अहम योगदान रहा। बाएं हाथ की स्पिनर श्री चरणी ने 3.2 ओवर में 16 रन देकर 2 विकेट लिए। इसके अलावा, दीप्ति शर्मा ने 3 विकेट लिए, जबकि नंदिनी शर्मा और प्रेमा रावत को भी 2-2 विकेट लिए।

श्री चरणी ने 2 विकेट लेकर एक साल में सर्वाधिक टी20 विकेट लेने के वाले भारतीय गेंदबाजों की सूची में दीप्ति शर्मा को पीछे छोड़ दिया। चरणी ने 2026 में अब तक 31 टी20 विकेट लिए है। दीप्ति शर्मा ने 2024 में 30 और 2022 में 29 विकेट लिए थे।

एक साल में सर्वाधिक टी20 विकेट लेने का महिला भारतीय रिकॉर्ड पूनम यादव के नाम है। पूनम ने 2018 में 35 विकेट लिए थे। श्री चरणी के पास इस रिकॉर्ड को पीछे छोड़ने का भरपूर अवसर है। पूरी संभावना है कि जारी एशिया कप में ही चरणी एक साल में सर्वाधिक टी20 विकेट लेने वाली भारतीय महिला गेंदबाज होने का भारतीय रिकॉर्ड अपने नाम कर लेंगी। हांगकांग के खिलाफ हुए इस मैच का मुख्य आकर्षण स्मृति मंधाना की शतकीय पारी रही। मंधाना ने 64 गेंदों पर 7 छक्कों और 14 चौकों की मदद से 124 रन की पारी खेली। मंधाना का टी20 क्रिकेट का यह दूसरा और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का 18वां शतक था। मंधाना अब महिला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में सबसे ज्यादा शतक लगाने वाली बल्लेबाज बन गई हैं।

सीपीएल 2026: दासुन शनाका का ऐतिहासिक शतक

सेंट किट्स ने सेंट लूसिया को 137 रन से हराया

वार्नर पार्क । कैरेबियन प्रीमियर लीग (सीपीएल) 2026 के 25वें मैच में श्रीलंकाई बल्लेबाज दासुन शनाका ने इतिहास रच दिया। सेंट किट्स एंड नेविस पैट्रियट्स की तरफ से खेलते हुए शनाका ने लीग के इतिहास का सबसे तेज शतक लगाया। शनाका की शतकीय पारी की बदौलत सेंट किट्स ने सेंट लूसिया किंग्स को 137 रन के विशाल अंतर से हराया। सेंट लूसिया किंग्स ने टॉस जीतकर गेंदबाजी का फैसला किया। पहले बल्लेबाजी करने उतरी सेंट किट्स की तरफ से पारी की शुरुआत जॉनसन चार्ल्स और काइल मायर्स ने की। शुरुआत अच्छी नहीं रही और मायर्स मात्र 1 रन बनाकर 8 के स्कोर पर पहले विकेट के रूप में आउट हुए। चार्ल्स और फ्लेचर ने दूसरे विकेट के लिए 48 गेंदों पर 81 रन की साझेदारी की। चार्ल्स 23 गेंदों पर 26 रन बनाकर दूसरे विकेट के रूप में आउट हुए। इसके बाद दासुन शनाका चौथे नंबर पर बल्लेबाजी के लिए आए।

बीसीसीआई ने किया ऐलान: पहली बार भारत और जापान के बीच खेला जाएगा टी20 मुकाबला

नई दिल्ली। भारत और जापान के बीच राजनयिक संबंधों के 75 साल पूरे होने के मौके पर इस महीने के आखिर में दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक टी20 इंटरनेशनल मुकाबला खेला जाएगा। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने शुक्रवार को इस बात की घोषणा की है। 'सुजुकी कप' नाम का यह मैच 22 सितंबर को तोचिगी प्रान्त के सानो इंटरनेशनल क्रिकेट ग्राउंड पर खेला जाएगा। यह मैच 'स्पोर्ट 75' नाम की एक बड़ी द्विपक्षीय पहल की शुरुआत करने वाला मुख्य कार्यक्रम है। यह पहल जापानी प्रधानमंत्री सनाए तकाइची और भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच शिखर सम्मेलन में हुए समझौते से शुरू हुई थी, जिसका मकसद खेलों के आदान-प्रदान और सहयोग को बढ़ावा देना है। शुक्रवार को बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने एक बयान में कहा, 'बीसीसीआई इस ऐतिहासिक मौके का हिस्सा बनकर खुश है, क्योंकि भारत और जापान की पुरुष टीमें जापान में एक खास टी20 इंटरनेशनल मैच के लिए एक साथ आ रही हैं। यह क्रिकेट के लिए एक अहम पल है, क्योंकि इससे भारतीय टीम एक नई जगह पर जा रही है और जापान व पूर्वी एशिया में ज्यादा लोगों तक खेल को पहुंचाने का मौका मिल रहा है। '

उन्होंने आगे कहा, 'भारत और जापान के बीच मजबूत रिश्ते और लंबे समय से चली आ रही दोस्ती है। हमें खुशी है कि दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों के 75 साल पूरे होने के जश्न में क्रिकेट भी शामिल होगा। हम इस मैच को मुमकिन बनाने की कोशिशों के लिए जापान क्रिकेट एसोसिएशन (जेसीए) का शुक्रिया अदा करते हैं। '

सैकिया ने आगे कहा कि भारतीय बोर्ड गैर-पारंपरिक इलाकों में खेल के विस्तार की कोशिशों में मदद करने की अपनी जिम्मेदारी को समझता है। उन्होंने कहा, 'बीसीसीआई का मानना ??है कि क्रिकेट का विकास इसके पारंपरिक इलाकों से आगे बढ़ना चाहिए, और दुनिया के सबसे बड़े क्रिकेट बोर्ड के तौर पर हम उस विकास में योगदान देने की अपनी जिम्मेदारी को समझते हैं। बीसीसीआई, जापान में क्रिकेट को और मजबूत करने और आने वाले वर्षों में इस रिश्ते को और आगे बढ़ाने के लिए जेसीए के साथ मिलकर काम करेगा। '

फैन्स की बढ़ती दिलचस्पी को देखते हुए आयोजक सानो वेन्यू की क्षमता को आमतौर पर 500 दर्शकों से बढ़ाकर 2,000 करने की योजना बना रहे हैं। जल्द ही आधिकारिक तौर पर टिकटों की बिक्री शुरू होने की उम्मीद है। भारतीय पुरुष टीम 24 सितंबर से 3 अक्टूबर तक एशियन गेम्स के पुरुष इवेंट में खेलने के लिए जापान आ रही है।

जापान क्रिकेट एसोसिएशन के चीफ एग्जीक्यूटिव नाओकी मियाजी ने मौजूदा वर्ल्ड चैंपियंस के आने को स्थानीय स्तर पर इस खेल के लिए एक बड़ा बदलाव बताया। 'मौजूदा वर्ल्ड चैंपियंस को जापान में क्रिकेट के लिए घर में बुलाना हमारी एसोसिएशन के लिए एक यादगार पल है।

10,000 रन की लिस्ट में 3-4 और भारतीय खिलाड़ियों को देखना चाहती हूं: स्मृति

दुबई । भारतीय महिला क्रिकेट टीम की उपकप्तान स्मृति मंधाना ने दुबई में टी20 फॉर्मेट में खेले जा रहे महिला एशिया कप में गुरुवार को हांगकांग के खिलाफ खेले गए मैच में 64 गेंदों पर 124 रनों की पारी खेली। अंतरराष्ट्रीय टी20 में मंधाना का यह दूसरा और ओवरऑल है। हांगकांग के खिलाफ भारतीय टीम की 137 रन से जीत के बाद मंधाना ने बीसीसीआई द्वारा साझा वीडियो में कहा, 'मुझे हमेशा लगता था कि यह मेरा काम है। मैंने कभी भी रिकॉर्ड्स और नंबर्स और इंडिया के लिए जीते गए मैचों की संख्या के अलावा किसी और चीज के बारे में नहीं सोचा। यह एक ऐसा पैमाना है जिसे आप वापस लेते हैं। आप यह वापस नहीं लेते कि आपने कितने रन या रिकॉर्ड तोड़े हैं। ' मंधाना ने कहा, 'अगर मेरी वजह से दस प्रतिशत लड़कियां भी बैट और बॉल उठाकर क्रिकेट खेलना शुरू करती हैं, तो मुझे लगता है कि यह कुछ ऐसा होगा जिस पर मुझे हमेशा गर्व और खुशी होगी। 'अंतरराष्ट्रीय महिला क्रिकेट में सर्वाधिक रन बनाने का कीर्तिमान हासिल करने पर मंधाना ने कहा, 'मिताली को देखते हुए बड़ी हुई हूं। वह हर किसी के लिए आदर्श रही हैं। मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं 10,000 तक पहुंचूंगी और उनसे आगे निकल जाऊंगी। उम्मीद है कि 10,000 की लिस्ट में इंडियन सेट-अप से तीन-चार और खिलाड़ी होंगे और मैं इसी से आंकलन करना चाहूंगी। अगर मैं सवाल पर वापस आऊं, तो टॉप पांच लिस्ट में तीन या चार को साथ रखना बहुत अच्छा होगा, और वह तीन या चार भारतीय होंगे। मुझे लगता है कि मैं इसी से अपने करियर को आंकूंगी। '

स्मृति अंतरराष्ट्रीय महिला क्रिकेट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाली बल्लेबाज हो गई हैं। तीनों फॉर्मेट मिलाकर उन्होंने 10,880 रन बनाए हैं। हांगकांग के खिलाफ मैच में उन्होंने पूर्व भारतीय कप्तान मिताली राज के 10,868 रन के रिकॉर्ड को तोड़ा।

मंधाना ने अपने खेल में सुधार की बात की। उन्होंने कहा, 'मैं यह नहीं कहूंगी कि आप एक बल्लेबाज या गेंदबाज के तौर पर कभी पूरे होते हैं। अगर आपको ऐसा लगता है, तो क्रिकेट हमेशा आपको दिखाएगा कि आप पूरे नहीं हैं। '

दलीप ट्रॉफी: फाइनल में साउथ जोन के लिए खेलेंगे पडिक्कल और सिराज

नई दिल्ली । भारत के इंटरनेशनल खिलाड़ी देवदत्त पडिक्कल और मोहम्मद सिराज दलीप ट्रॉफी के फाइनल मुकाबले मे साउथ जोन की तरफ से खेलेंगे। खिताबी मुकाबले में साउथ जोन की भिड़ंत ईस्ट जोन से 6 सितंबर से होनी है। ये दोनों खिलाड़ी हाल ही में श्रीलंका के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज में खेले थे, जिसे भारत ने 1-0 से अपने नाम किया था। इस सीरीज में पडिक्कल का प्रदर्शन दमदार रहा था और उन्होंने 2 टेस्ट मैचों में 328 रन बनाए थे। पडिक्कल के बल्ले से दोनों ही मुकाबलों में शतकीय पारी निकली थी और वह 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' रहे थे। सिराज का प्रदर्शन भी श्रीलंका के खिलाफ बढ़िया रहा था और उन्होंने कुल 4 विकेट अपने नाम किए थे। हालांकि, इन दोनों को फाइनल के लिए टीम में शामिल किया गया है, लेकिन यह साफ नहीं है कि इन्होंने टीम में किसकी जगह ली है। 'ईएसपीएन क्रिकइंफो' के अनुसार, वैभव सूर्यवंशी, ईशान किशन और तिलक वर्मा नियमित रूप से भारत की टी20 टीम का हिस्सा हैं। इसके बावजूद, उनके दलीप ट्रॉफी का फाइनल खेलने की संभावना है। पडिक्कल और सिराज को फाइनल मुकाबले के लिए साउथ जोन के स्क्वॉड में शामिल किया गया है। हालांकि, यह मैच 10 सितंबर को खत्म होगा, जबकि भारत की अफगानिस्तान के खिलाफ टी20 इंटरनेशनल सीरीज सिर्फ तीन दिन बाद शुरू होनी है। फिर भी उम्मीद की जा रही है कि ये खिलाड़ी फाइनल में खेल सकते हैं। तिलक ने हाल ही में नॉर्थ जोन के खिलाफ सेमीफाइनल में साउथ जोन के लिए शानदार शतक लगाया था और रेड-बॉल टूर्नामेंट के फाइनल में खेलने की इच्छा जाहिर की थी। तिलक वर्मा ने गुरुवार को कहा, 'मैं दलीप ट्रॉफी का फाइनल खेलना चाहता हूं। अभी हमारा मैच खत्म हुआ है और अफगानिस्तान के खिलाफ पहला टी20 मैच 13 सितंबर को है। इसी कारण मेरे पास फाइनल खेलने का समय है। फाइनल के बाद हमारे पास दो दिन का ब्रेक भी रहेगा। अगर मैं 11 सितंबर को टीम से जुड़ता हूं, तो एक दिन अभ्यास कर सकता हूं और फिर मैच खेलने के लिए तैयार रहूंगा। ' तिलक ने सेमीफाइनल में साउथ जोन की कप्तानी की थी, जबकि ईशान किशन ईस्ट जोन की कमान संभालते हुए नजर आए थे। वैभव सूर्यवंशी ने ईस्ट जोन के उपकप्तान की जिम्मेदारी संभाली थी।

पाक टीम में हुए बदलावों को लेकर गिलेस्पी ने की आकिब जावेद की आलोचना

बोले- डरकर खेल रहे खिलाड़ी

एडिलेड। पाकिस्तान के पूर्व हेड कोच जेसन गिलेस्पी ने इंग्लैंड के मौजूदा टेस्ट दौरे के बीच टीम में किए गए बड़े बदलावों के बाद चीफ सिलेक्टर आकिब जावेद की जमकर आलोचना की है। उन्होंने कहा कि नेशनल टीम के खिलाड़ी डर के साये में खेल रहे हैं। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने इंग्लैंड के खिलाफ पहले दो टेस्ट मैचों में मिली बड़ी हार के बाद कड़े फैसले लिए हैं।

बोर्ड ने हेड कोच सरफराज अहमद और गेंदबाजी कोच उमर गुल को उनके पद से हटा दिया। इसके अलावा मोहम्मद रिजवान, इमाम-उल-हक और सलमान अली आगा समेत सात खिलाड़ियों को टीम से बाहर कर घर भेज दिया गया है। यह कार्रवाई हेडिंग्ले और लॉर्ड्स में पाकिस्तान के खराब प्रदर्शन के बाद की गई। 2024 में पाकिस्तान टीम को कोचिंग देने वाले गिलेस्पी ने कहा कि अचानक हटाए जाने से पता चलता है कि जावेद की अगुवाई वाली सिलेक्शन कमेटी में रणनीतिक दिशा की पूरी तरह कमी है।

शुक्रवार को गिलेस्पी ने कहा, 'मुझे खिलाड़ियों के लिए बुरा लगता है, यह उनकी रोजी-रोटी है। बाहर से देखने पर ऐसा लगता है कि वे डरकर खेल रहे हैं। सलमान अली आगा इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट में टीम की कप्तानी करते हैं, फिर दूसरे टेस्ट के लिए टीम से बाहर हो जाते हैं और तीसरे टेस्ट से पहले घर लौटने वाले प्लेन में होते हैं। यह कैसे होता है? यह बिल्कुल साफ है कि उनके पास कोई सिलेक्शन रणनीति नहीं है, खासकर आकिब जावेद के नेतृत्व में। वे अपनी राय वैसे ही बदलते हैं, जैसे पैंट बदलते हैं- रोजाना। '

भारतीय अंडर 19 टीम के लेग स्पिनर रोहित यादव पर 2 साल का बैन

उम्र में गड़बड़ी के कारण कार्रवाई

नई दिल्ली । क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल (सीएबी) को रोहित यादव के जन्म से जुड़े कागजात में उम्र को लेकर बड़ी गड़बड़ी मिली है, जिसके बाद भारत की अंडर-19 पुरुष टीम के लेग-स्पिनर पर दो साल का बैन लगा दिया गया है। यादव जुलाई में श्रीलंका दौरे पर गई भारत की अंडर-19 पुरुष टीम का हिस्सा थे और उन्होंने यूथ टेस्ट में 6 विकेट भी लिए थे। हालांकि, कागजात की जांच में जन्म-रिकॉर्ड में बड़ी गड़बड़ी पाए जाने के बाद अब उन्हें खेल के सभी फॉर्मेट में खेलने से रोक दिया गया है। इस कारण उन्हें उस टीम से भी बाहर कर दिया गया है, जो इस महीने के आखिर में राजकोट और अहमदाबाद में ऑस्ट्रेलिया अंडर-19 टीम के खिलाफ पांच वनडे और दो मल्टी-डे मैच खेलने वाली है। शुक्रवार को भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के एक सूत्र ने 'आईएएनएस' को बताया, 'हां, सीएबी से जानकारी मिलने के बाद उन्हें टीमों से हटा दिया गया है। दोनों टीमों में उनकी जगह कौन लेगा, इस बारे में बाद में पता चलेगा।' सीएबी की जांच में यादव से जुड़े कई दस्तावेजों में अलग-अलग जानकारी मिली। जांच के दौरान उनके तीन अलग-अलग जन्म प्रमाण पत्र सामने आए, जिनमें जन्म वर्ष 2006, 2007 और 2009 दर्ज है। इसके अलावा, 2014 से 2021 के बीच उनके आधार कार्ड की जानकारी में भी कई बार बदलाव किए गए थे। माना जा रहा है कि इन अलग-अलग रिकॉर्ड की वजह से उनकी उम्र को लेकर करीब 27 महीने का अंतर सामने आया है।

सीएबी की कार्रवाई के तहत, उम्र में गड़बड़ी और कागजात में अनियमितताओं के कारण कुल 65 खिलाड़ियों को 2026-27 और 2027-28 घरेलू सीजन के लिए रजिस्ट्रेशन या ट्रांसफर से रोक दिया गया है। सजा पाने वालों में भारत की अंडर-19 विश्व कप विजेता टीम के सदस्य रवि कुमार भी शामिल हैं। बाएं हाथ के इस तेज गेंदबाज ने अंडर-19 विश्व कप 2022 के फाइनल में इंग्लैंड के खिलाफ शानदार गेंदबाजी करते हुए 34 रन देकर 4 विकेट लिए थे और भारत को खिताब जिताने में अहम भूमिका निभाई थी। हालांकि, सीएबी की जांच में रवि कुमार की उम्र से जुड़े रिकॉर्ड में 45 महीने का अंतर पाया गया है। इसके चलते 2021/22 से 2025/26 सीजन के बीच जूनियर और उम्र-वर्ग की प्रतियोगिताओं में उनके सभी रिकॉर्ड अमान्य माने जाएंगे।

डालिंब में जितेंद्र कुमार का रहस्यमयी अवतार

'पंचायत' फेम जितेंद्र कुमार का एक नया प्रोजेक्ट ओटीटी पर दस्तक देने की तैयारी में है। यह साइकोलॉजिकल थ्रिलर फिल्म 'डालिंब' है, जो सीधे ZEE पर रिलीज होगी। मराठी में 'डालिंब' का अर्थ अनार होता है, हालांकि यह एक हिंदी भाषी फिल्म है। इसमें जितेंद्र के साथ प्रिया बापट भी अहम भूमिका में हैं। फिल्म की कहानी मुंबई की एक बहुमंजिला इमारत में सेट है, जहां एक बच्चे के अचानक गायब होने के बाद रहस्य की परतें खुलनी शुरू होती हैं।

जितेंद्र-बुल्लू का नहीं होगा 'पंचायत' जैसा टकराव

फिल्म में जितेंद्र के साथ उनके 'पंचायत' के साथी कलाकार बुल्लू कुमार भी हैं। सूत्रों के मुताबिक, बुल्लू और जितेंद्र इसमें एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं बल्कि दोनों अपने-अपने किरदार और कहानी के हिस्से के मुताबिक आगे बढ़ते हैं। यहां दोनों के बीच 'पंचायत' जैसी नोक-झोंक नहीं होगी। 'डालिंब' की कहानी का मुख्य बैकड्रॉप मुंबई की एक हाई-राइज बिल्डिंग है। टीजर में भी बच्चे के गायब होने और उसके बाद पैदा होने वाले तनाव की झलक दिखाई गई है। मेकर्स ने कहानी के बड़े हिस्से को अभी छिपाकर रखा है। इसे सिर्फ बच्चे की तलाश वाली कहानी मानना सही नहीं होगा। इसे साइकोलॉजिकल थ्रिलर के तौर पर पेश किया जा रहा है। इस कहानी में कई ऐसे प्लॉट और सस्पेंस हैं जो चौंकाएंगे। सूत्रों से हुई बातचीत में फिल्म के बारे में एक और दिलचस्प संकेत मिला। 'डालिंब' में आस्था का पहलू भी देखने को मिल सकता है। सूत्र ये भी कहते हैं कि आस्था और मनोविज्ञान का यह मेल 'डालिंब' को पारंपरिक क्राइम थ्रिलर से अलग बनाता है। कहानी में रहस्य तो है, लेकिन इसके साथ इंसानी सोच और विश्वास को भी जगह दी गई है। यही कारण है कि फिल्म को 'रमन राघव 2.0' या 'असुर' जैसी पारंपरिक मर्डर मिस्ट्री के साथ सीधे जोड़ना ठीक नहीं होगा। 'डालिंब' का ट्रीटमेंट इससे अलग बताया जा रहा है। 'पंचायत' के सचिव जी के तौर पर जबरदस्त लोकप्रियता हासिल करने वाले जितेंद्र के लिए 'डालिंब' एक अलग तरह का प्रयोग है। उनका किरदार फिल्म में काफी लेयर्ड है और इसे उनकी स्थापित कॉमिक इमेज से अलग रखने की कोशिश की गई है। 'डालिंब' उन्हें एक ज्यादा गंभीर और रहस्यमयी दुनिया में ले जाती है। साथ ही हाई-राइज बिल्डिंग का सेटअप इस कहानी की अहम जरूरत है। प्रिया और जितेंद्र पहली बार इस तरह की साइकोलॉजिकल थ्रिलर में साथ दिखाई देंगे। 'डालिंब' में जितेंद्र और बुल्लू की मौजूदगी 'पंचायत' के दर्शकों के लिए जरूर एक कनेक्शन बनाएगी। सूत्रों ने बताया कि 'डालिंब' में बुल्लू एक सिक्योरिटी गार्ड की भूमिका निभा रहे हैं। उनका किरदार उत्तर भारत से आया हुआ है और मुंबई की उस बिल्डिंग में सुरक्षा व्यवस्था से जुड़ा है, जहां फिल्म की पूरी कहानी घटती है। यह किरदार इसलिए भी अहम हो जाता है क्योंकि कहानी का बड़ा हिस्सा इसी बिल्डिंग के भीतर है।

प्रिया एवेन करेंगी निर्देशन में डेब्यू, अधिकतर शूट मुंबई में ही हुआ है

'डालिंब' के जरिए प्रिया एवेन फीचर फिल्म निर्देशन में कदम रख रही हैं। उन्होंने कहानी को एक सीमित लोकेशन के भीतर रखते हुए किरदारों और उनके मनोविज्ञान पर फोकस किया है। बच्चे के गायब होने के साथ शुरू होने वाला यह रहस्य धीरे-धीरे वहां रहने वाले हर किरदार की जिंदगी को अपनी चपेट में लेता चला जाता है। फिल्म की शूटिंग का ज्यादातर हिस्सा मुंबई में ही शूट किया गया है।

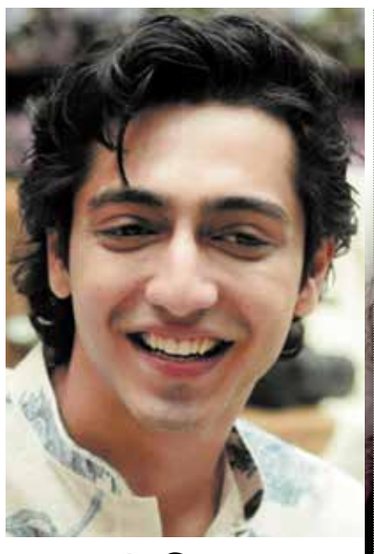

अगली फिल्म में गैंगस्टर बनेंगे अहान पांडे

यशराज बैनर की फिल्म 'सैयारा' से चर्चा में आए अभिनेता अहान पांडे अब अपने दूसरे बड़े प्रोजेक्ट के अंतिम चरण की शूटिंग में पहुंच गए हैं। इंडस्ट्री सूत्रों के अनुसार, निर्देशक अली अब्बास जफर की अनाम रोमांटिक-एक्शन फिल्म का करीब दो महीने लंबा यूनाइटेड किंगडम (यूके) शेड्यूल पूरा हो चुका है। इस दौरान फिल्म के कई अहम ड्रामेटिक सीक्वेंस और तीन बड़े गानों की शूटिंग की गई। फिल्म में अहान के साथ शरवरी मुख्य भूमिका में नजर आएंगी।

तीन बड़े गानों पर रहा खास फोकस

सूत्रों के अनुसार...यूके शेड्यूल में फिल्म के तीन बड़े गानों की शूटिंग की गई। इनमें एक सोलो गीत पूरी तरह अहान पांडे के किरदार पर आधारित है, जिसे बर्मिंघम के टाउन हॉल इलाके में फेस्टिवल जैसे माहौल के बीच फिल्माया गया। इस गाने में बड़ी संख्या में डांसर्स और स्थानीय कलाकार शामिल हुए। वहीं, अहान और शरवरी पर दो रोमांटिक गानों की शूटिंग बर्मिंघम, कोवेंट्री, पेनरिथ और कार्लाइल की खूबसूरत लोकेशनों पर हुई।

गैंगस्टर बनने की यात्रा पर आधारित कहानी

फिल्म की कहानी को लेकर अभी आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है, लेकिन इंडस्ट्री सूत्रों के मुताबिक यह सिर्फ एक गैंगस्टर फिल्म नहीं होगी। कहानी एक ऐसे युवा की यात्रा दिखाएगी, जो परिस्थितियों के चलते अपराध की दुनिया में कदम रखता है।

फिल्म में मेंटॉर की भूमिका निभाएंगे बॉबी देओल

फिल्म में बॉबी देओल का किरदार कहानी का अहम आधार होगा। बताया जा रहा है कि उनका पात्र अहान पांडे के किरदार को अपने संरक्षण में लेकर अपराध की दुनिया में आगे बढ़ाता है। यानी वह एक प्रभावशाली मेंटॉर के रूप में नजर आएंगे, जो कहानी की दिशा तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। वहीं, ऐश्वर्य ठाकरे फिल्म के मुख्य विलेन की भमिका में दिखाई देंगे।

अनटाइटल्ड रोमांटिक कॉमेडी फिल्म में नजर आएंगी सिमर भाटिया

श्रीराम राघवन की 'इक्कीस' से बॉलीवुड डेब्यू करने वालीं सिमर भाटिया अब अपने दूसरे प्रोजेक्ट के साथ फिर बड़े परदे पर दिखेंगी। बता दें कि सिमर, अक्षय कुमार की बहन अलका भाटिया की बेटी हैं। जानकारी के मुताबिक, सिमर इस बार मलयालम एक्टर रोशन मैथ्यू के साथ एक अनटाइटल्ड रोमांटिक कॉमेडी में नजर आएंगी। यह फिल्म एक इमोशनल और कैरेक्टर-ड्रिवन लव स्टोरी होगी। फिल्म का डायरेक्शन अधिराज बोस संभालेंगे, जो इस फिल्म से अपना फीचर डायरेक्शन डेब्यू कर रहे हैं। इन्होने 'एक थी डायन' और 'तलवार' जैसी फिल्मों में बतौर असिस्टेंट डायरेक्टर काम किया हैं। इस रोमांटिक ड्रामा को आयुष माहेश्वरी अपने बैनर बीएलएम पिक्चर्स के तहत प्रोड्यूस करेंगे, जो पहले 'धक धक', 'लूप लपेटा' और 'यारियां 2' जैसी फिल्मों को प्रोड्यूस कर चुका है। फिल्म की शूटिंग नवंबर में शुरू होगी और मेकर्स की प्लानिंग है कि अगले साल के मध्य में इसे थिएटर्स में रिलीज किया जाए। दूसरी ओर, रोशन जल्द ही 'ट्रायल बाय फायर' के डायरेक्टर प्रशांत नायर की नई स्कैम-थ्रिलर सीरीज 'जॉब ट्रैफिकिंग' में भी दिखेंगे, जो अमेजन प्राइम वीडियो पर अगले साल की शुरुआत में रिलीज होने की उम्मीद है। इससे पहले रोशन मलयालम सिनेमा में 'सी यू सून', 'मूथोन' और हाल ही में आई 'उयिर' जैसी फिल्मों से अपनी पहचान बना चुके हैं।

'मॉन्स्टर' में हुई रोनित रॉय की एंट्री

सलमान खान की फिल्म 'मॉन्स्टर' पिछले काफी समय से चर्चा बनी हुई है। इसे शुरुआत में एक प्रोजेक्ट के तौर पर आगे बढ़ाया गया था, लेकिन अब इसकी स्टारकास्ट और कहानी का दायरा लगातार बड़ा होता जा रहा है। फिल्म को लेकर एक नई जानकारी सामने आई है। अब रोनित रॉय और सीमा बिस्वास भी इस फिल्म का हिस्सा बन गए हैं। दोनों एक्टर्स फिल्म में अहम किरदारों में नजर आएंगे। फिल्म में रोनित का किरदार काफी खास बताया जा रहा है। रिपोर्ट्स के मुताबिक...'वह फिल्म में पॉजिटिव और बड़े कद वाले किरदार में नजर आएंगे।

वीर दास ने अपनी दूसरी डायरेक्टोरियल फिल्म 'बारा नंबर' की शूटिंग पूरी की

कॉमेडियन और एक्टर वीर दास ने अपनी दूसरी डायरेक्टोरियल फिल्म 'बारा नंबर' की शूटिंग पूरी कर ली है। यह एक साइकोलॉजिकल थ्रिलर है, जिसे फाउंड फुटेज फॉर्मेट में बनाया गया है। इस फॉर्मेट में कहानी कैमरे से मिले फुटेज के जरिए आगे बढ़ती है। फिल्म में वीर डायरेक्टर और प्रोड्यूसर के साथ-साथ एक्टर के तौर पर भी नजर आएंगे। फिल्म को नरेश मलिक, जेफ लाजरस और कौशिक श्रीनिवासन की थर्ड फ्रेम स्टूडियो, कविता गुप्ता और विर की जाजू प्रोडक्शंस ने को-प्रोड्यूस किया है। कवी शास्त्री क्रिएटिव प्रोड्यूसर हैं। फिल्म में शीबा चड्ढा, सुहैल नय्यर, अरुणोदय सिंह, अहसास चन्ना, अतुल कुलकर्णी, निहारिका लायरा दत्त, श्रिया पिलगांवकर, पूजा सरूप और नवीन कौशिक समेत कई कलाकार हैं। फिल्म की कहानी फाउंड फुटेज के जरिए आगे बढ़ेगी। इसमें कैमरे से रिकॉर्ड हुए फुटेज को कहानी का हिस्सा बनाया गया है। फिल्म का फोकस किरदारों की मनोवैज्ञानिक स्थिति और उनके आसपास होने वाली घटनाओं पर रहेगा। इस फॉर्मेट के चलते फिल्म में पारंपरिक शूटिंग स्टाइल के बजाय कैमरा खुद कहानी का हिस्सा नजर आएगा। वीर ने बताया कि इस फिल्म को बनाना उनके लिए अलग अनुभव रहा। उनके मुताबिक, फाउंड फुटेज फॉर्मेट में कलाकारों को भी अपने अभिनय में स्वाभाविकता बनाए रखने पर काम करना पड़ा। उन्होंने यह भी कहा कि फिल्म में सभी कलाकारों ने इस अलग तरह की कहानी पर काम करने के लिए प्रयोग किए। शूटिंग पूरी होने के बाद अब फिल्म एडिटिंग और पोस्ट-प्रोडक्शन स्टेज में जाएगी। बता दें कि वीर को पिछली बार फिल्म 'हैप्पी पटेल...' में देखा गया था।

कृति सेनन एड विवाद पर बोलीं उर्वशी रौतेला

एक्ट्रेस कृति सेनन के रक्षाबंधन एडवर्टाइजमेंट विवाद पर अब उर्वशी रौतेला की प्रतिक्रिया सामने आई है। न्यूज एजेंसी से बातचीत में उर्वशी ने कहा कि वे किसी भी महिला को उसके कपड़ों से जज नहीं करती हैं, लेकिन क्रिएटिविटी के नाम पर सांस्कृतिक संवेदनशीलता से समझौता नहीं होना चाहिए। रक्षाबंधन भारत का बेहद पवित्र त्योहार है और इसकी मर्यादा का ध्यान रखा जाना चाहिए। बता दें कि ज्वेलरी ब्रांड जीवा के इस विज्ञापन में कृति सेनन के इंडो-वेस्टर्न पहनावे को लेकर सोशल मीडिया पर काफी विरोध हुआ था, जिसके बाद ब्रांड ने विज्ञापन को हटा लिया है। 'क्रिएटिविटी और परंपरा को एक साथ न मिलाएं' बातचीत में उर्वशी रौतेला ने कहा, 'हम आजादी और क्रिएटिविटी का जश्न मनाते हैं, लेकिन हमें यह सोचना होगा कि रक्षाबंधन एक संवेदनशील और पवित्र त्योहार है। इसे देश के करोड़ों लोग मनाते हैं और हमें अपनी परंपराओं पर गर्व है। हमें यह समझना होगा कि क्रिएटिविटी के नाम पर रक्षाबंधन जैसी पवित्र परंपरा से खिलवाड़ नहीं किया जा सकता।' 'हमें तय करना होगा कि कहां सीमा होनी चाहिए' उर्वशी ने बातचीत के दौरान भारतीय संस्कृति के प्रति अपने सम्मान का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन भाई-बहन के अटूट रिश्ते का खूबसूरत त्योहार है। उर्वशी ने जोर देते हुए कहा, 'हमें एक सीमा तय करनी होगी कि हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं। आखिरकार हम सब भारतीय हैं और हमें अपने देश और संस्कृति का सम्मान करना चाहिए।'

क्या है पूरा विवाद

कृति सेनन ने एड में रिवीलिंग कपड़े पहने- यह पूरा विवाद जीवा ज्वेलरी ब्रांड के 36 सेकंड के रक्षाबंधन एडवर्टाइजमेंट से शुरू हुआ था। रक्षाबंधन से जुड़े इस एड में कृति ने ऑफ व्हाइट ब्रालेट स्टाइल ब्लाउज, केप और ड्रेप्ड स्कर्ट पहना था। सोशल मीडिया यूजर्स के एक वर्ग ने इस लुक की आलोचना की। उनका कहना था कि परिवार और परंपरा से जुड़े त्योहार के लिए यह आधुनिक स्टाइल सही नहीं है।

'डोरोथी' में लीड रोल प्ले करेंगी कीर्ति सुरेश

निर्देशक कार्तिक सुब्बाराज ने अपनी फिल्म 'डोरोथी' का ऐलान कर दिया है। इस फिल्म में कीर्ति सुरेश मुख्य भूमिका निभाएंगी। फिल्म 25 सितंबर को दुनियाभर के थिएटर्स में रिलीज होगी। कार्तिक ने सोशल मीडिया पर फिल्म की घोषणा करते हुए बताया कि 'डोरोथी' उनके दिल के बेहद करीब है और वह इसे कई वर्षों से बनाना चाहते थे। उन्होंने यह भी बताया कि फिल्म का म्यूजिक इलैयाराजा तैयार कर रहे हैं। वह इसके गाने और बैकग्राउंड स्कोर दोनों की जिम्मेदारी संभालेंगे। फिल्म में कीर्ति के अलावा सनंत और ऋषिकांत भी अहम भूमिकाओं में नजर आएंगे। हालांकि, मेकर्स ने अभी फिल्म की कहानी और बाकी स्टार कास्ट से जुड़ी जानकारी साझा नहीं की है। कार्तिक की पिछली फिल्म 'रेट्रो' थी, जिसमें सूर्या और पूजा हेगड़े मुख्य भूमिकाओं में नजर आए थे। फिल्म में जयराम, जोजू जॉर्ज और नासर ने भी अहम किरदार निभाए थे। यह फिल्म फिलहाल नेटफ्लिक्स पर स्ट्रीम हो रही है। अब यह फिल्म कार्तिक के निर्देशन में बनने वाली 10वीं फिल्म होगी। इसके जरिए कीर्ति सुरेश एक नई कहानी के साथ दर्शकों के सामने नजर आएंगी।

विजय देवरकोंडा संग नजर आएंगी कीर्ति

कीर्ति सुरेश हाल ही में फिल्म 'रिवॉल्वर रीटा' में नजर आई थीं। अब वह विजय देवरकोंडा के साथ फिल्म 'राउडी जनार्धना' में दिखाई देंगी, जो दिसंबर में रिलीज होगी।

स्व. एडवोकेट ईश्वरभाई नायक एवं उनकी धर्मपत्नी स्व. उर्मिलाबेन नायक की स्मृति में

शिक्षक दिवस पर दमण लायंस परिवार ने आयोजित किया सम्मान समारोह

■ सम्मान समारोह की मुख्य अतिथि डॉ. बिनल नायक और अन्य अतिथियों ने सेवानिवृत्त शिक्षकों और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को किया सम्मानित

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 5 सितंबर। दमण लायंस परिवार दमण द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी शिक्षक दिवस पर स्व.एडवोकेट ईश्वरभाई नायक एवं उनकी धर्मपत्नी स्व. उर्मिलाबेन नायक की याद में 5 सितंबर को दमण के होटल उमेश में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में मनोज नायक की सुपुत्री डॉ. बिनल नायक, अतिथि विशेष के रूप में रिजनल चेयरपर्सन लायन बिपीन पटेल (एमजेएफ) एवं जोन चेयरपर्सन ज्योति रविंद्र (एमजेएफ) उपस्थित रहें। मुख्य वक्ता के रूप में सेवानिवृत्त शिक्षक राजेन्द्र डी टंडेल उपस्थित रहे और उन्होंने शिक्षक दिवस से संबंधित संबोधन दिया। इस समारोह की मुख्य अतिथि डॉ. बिनल नायक ने अपने संबोधन में शिक्षकों के महत्व और उनकी भूमिका के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि मेरी दादी स्व. उर्मिलाबेन नायक भी शिक्षक थी, जो विद्यालय की प्रिंसिपल रहते हुए 60 वर्ष की उम्र में सेवानिवृत्त हुई थी। इसके बाद उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि, अभी दो दिन पहले मैंने एक सोशल मीडिया पर रील देखी। जिसमें कुछ इस तरह था कि उसमें एक डायस था, उसमें चार लोगों को बिठाया गया था। चारों के सामने नेम प्लेट थी। जिसमें एक के सामने लिखा था कैप्टन विक्रम, दूसरे के सामने स्मिता पटेल और एक के सामने डॉ. अमित शर्मा और एक थे जस्टीस सीमा। इसके बाद सामने तीन यंगस्टर को बिठाया था, जो कि स्कूल या कॉलेज जातें होंगे। उनसे पूछा गया कि यह चार लोग बैठे है, उनमें से सबसे अधिक इंपोर्टन्ट कौन है? एक ने कहा कि कैप्टन है, वजह बताई कि वह बॉर्डर पर रहता है, अपनी फैमिली को छोड़ कर लड़ाई लड़ता है क्योंकि हम यहाँ अपनी फैमिली के साथ निश्चिंत होकर रह सकें। किसी ने कहा कि डॉक्टर, क्योंकि 2020 में हम लॉकडाउन में थे। तब हम घर के अंदर थे और डॉक्टर्स घर के बाहर थे जो कि हमारे लिए फाईट कर रहे थे। तो किसी ने कहा कि जस्टीस, जज इंपोर्टन्ट है, क्योंकि यदि कोई क्राइम होता है, तब न्याय दिलाता है। कंस्टीट्युशन की रक्षा करता है। इसके बाद उन्हें यह सवाल किया गया कि, यह चारों में से सबसे कम इंपोर्टन्ट कौन है? इसमें तीनों का एक ही जवाब था, स्मिता पटेल। क्योंकि हमें पता नहीं यह कौन मैडम है? उनका प्रोफेशन क्या है? वह क्या करते हैं? हमें कोई आईडीया नहीं है। इस पर स्मिता पटेल को कहा गया कि आप अपनी पहचान साझा करें। तब स्मिता पटेल ने कहा कि मैं स्मिता पटेल हूँ। मैं एक स्कूल टीचर हूँ और यह तीनों मेरे छात्र है। यह सुनने के बाद तीनों छात्रों का माइंड चेन्ज हो गया। उन्होंने कहा कि स्मिता पटेल इज मोस्ट इंपोर्टन्ट। उन्होंने कहा कि आज के जमाने में यह फास्ट जनरेशन एआई की जनरेशन है। हमें कुछ जानना है, तो हम तुरंत गुगल पर जाते हैं। लेकिन गुगल भी हमें सिर्फ इंफोर्मेशन देता है। नॉलेज नहीं देता है। इंफोर्मेशन और नॉलेज दो अलग चीजें है और वह नॉलेज हमें शिक्षक के पास से मिलता है। शिक्षक वह पहला व्यक्ति है जो बचपन से ही बच्चों के गुण को देखकर उसे उसी तरह डायरेक्ट करते हैं। मेरा तो मानना यह है कि, सरकारी नियम के अनुसार शिक्षक को रिटायरमेंट लेनी पडती है। मैं तो कहती हूँ कि रिटायरमेंट एक एज लिमिट की वजह से होती है, किन्तु उनका नॉलेज अनलिमिटेड है और उसका कोई अंत नहीं है। शिक्षक के लिए जितना कहे उतना कम है। डॉ. बिनल नायक ने कहा कि हमारे प्रदेश से दमण की शिक्षिका पूर्णिमा पटेल को दिल्ली में आज राष्ट्रपति महोदया के हाथों बेस्ट शिक्षक अवार्ड मिला है, जो हमारे लिए गर्व की बात है। इस अवसर पर उपस्थित विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए उन्होंने कहा कि उनके लिए यहीं पढाई का सही समय है। यह सम्मान विद्यार्थियों के लिए मोटिवेशन और अन्य के लिए इंप्रेशन है। डॉ. बिनल नायक ने अपने दादा की कहीं हुई बातों को शेयर करते हुए कहा कि सफलता उन्हें मिलती है जो पसीने से नहाते हैं और जो पसीने से नहाता है वहीं इतिहास लिखता है। इस सम्मान समारोह के दौरान इस वर्ष सेवानिवृत्त हुए सरकारी एवं अन्य विद्यालयों के शिक्षकों का शॉल ओढाकर एवं पुष्पगुच्छ देकर सम्मान किया गया। इसके साथ ही 10वीं और 12वीं बोर्ड में उत्कृष्ट अंकों से उत्तीर्ण तेजस्वी विद्यार्थियों का भी सम्मान लायंस परिवार द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में दमण लायंस क्लब परिवार, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति रही।

दमण सब जेल में कानूनी जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 05 सितंबर। राज्य कानूनी सेवा प्राधिकरण दमण और एडवोकेट बार एसोसिएशन दमण के संयुक्त सहयोग से मोटी दमण स्थित सब जेल में आज सुबह 9:45 बजे कानूनी जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में वकील मयंक पटेल ने प्ली बारगेनिंग के बारे में कैदियों को जानकारी दी। वकील अल्पेश दमणिया ने कैदियों के अधिकार और मुकदमे के बारे में विस्तार से बताया। वकील जगदीश दमणिया ने जमानत प्रावधान के बारे में जानकारी दी। मोटी दमण सब जेल में कैदियों के लिए आयोजित कानूनी जागरूकता कार्यक्रम में कैदियों के अधिकार एवं अन्य प्रावधानों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

भाजपा फिशरमैन सेल के प्रदेश संयोजक के रूप में रामजी बिका की हुई नियुक्ति : दीव जिला भाजपा अध्यक्ष मोहन लकमणे ने सौंपा नियुक्ति पत्र

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दीव 05 सितंबर। संघ प्रदेश थ्रीडी भाजपा प्रभारी दुष्यंत पटेल एवं प्रदेश भाजपा अध्यक्ष महेश आगरिया के साथ चर्चा-विचारणा करने के बाद प्रदेश भाजपा महामंत्री जिग्नेश पटेल द्वारा संगठनात्मक नियुक्ति के अंतर्गत भाजपा फिशरमैन सेल के प्रदेश संयोजक के रूप में रामजी बिका की नियुक्ति की गई है। दीव स्थित भाजपा कार्यालय पर दीव जिला भाजपा अध्यक्ष मोहन लकमणे एवं प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष अमृता बामणिया ने रामजी बिका को नियुक्ति पत्र सौंपा। इस अवसर पर भाजपा संगठन के पदाधिकारियों एवं चुने हुए जनप्रतिनिधियों ने उपस्थित रहकर नवनियुक्त फिशरमैन सेल के प्रदेश संयोजक रामजी बिका को पुष्पगुच्छ देकर शुभकामनाएं दी।

डीएमसी वॉर्ड नं.6 में जन्माष्टमी पर दही-हांडी का हुआ आयोजन : काउंसिलर अस्पी दमणिया हुए शामिल

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दमण 05 सितंबर। भगवान श्री कृष्ण के जन्मोत्सव के पावन अवसर पर पूरे दमण में श्री कृष्ण जन्माष्टमी उत्साह, भक्ति और हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर डीएमसी वॉर्ड नंबर 6 में विभिन्न स्थानों पर दही-हांडी उत्सव आयोजित किए गए। जिसमें निवासियों, परिवारों और उत्साही युवाओं की भारी भीड़ उमड़ी। भगवान कृष्ण के बालपन की लीलाओं और माखन के प्रति उनके प्रेम से जुड़ी आनंदमयी परंपराओं को जीवंत करते हुए युवा टीमों ने लटकी हुई मटकियों तक पहुँचने और उन्हें फोड़ने के लिए मानव पिरामिड बनाए। दर्शकों की तालियों और उत्सवी संगीत के बीच वॉर्ड के विभिन्न मोहल्लों में कुल मिलाकर लगभग 12 दही-हांडियाँ सफलतापूर्वक फोड़ी गईं। काउंसिलर अस्पी दमणिया ने वॉर्डवासियों के साथ उत्सव में सक्रिय रूप से भाग लिया और खुद भी दही-हांडी फोड़ने में शामिल हुए। उन्होंने स्थानीय युवाओं का उत्साहवर्धन किया और समुदाय के साथ मिलकर खुशियाँ मनाईं। इस आयोजन में व्यापक जनभागीदारी देखने को मिली। जिसमें मुकुलभाई, किंकनभाई, जसविंदर कौर, पंकजभाई, जयभाई और अन्य प्रमुख स्थानीय लोग एवं आयोजक उपस्थित रहे। परिवारों, बच्चों और बुजुर्गों ने बड़ी संख्या में एकत्र होकर इस जीवंत सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद लिया, जिससे वॉर्ड नंबर 6 में जन्माष्टमी का यह उत्सव एक यादगार बन गया।

दीव के वणाकबारा कोली समाज ने धूमधाम से मनाई जन्माष्टमी, एनिमेशन से कृष्ण लीलाओं का कराया दर्शन

असली आजादी न्यूज नेटवर्क, दीव 05 सितंबर। दीव के वणाकबारा में कोली समाज द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी जन्माष्टमी धूमधाम से मनाई गई। वणाकबारा स्थित महाकालेश्वर मंदिर को जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में विशेष रूप से सजाया गया था और एनिमेशन के माध्यम से कृष्ण लीलाओं का दृश्य प्रस्तुत किया गया था। मंदिर में भक्तों के लिए कृष्ण भगवान के बाल स्वरूप, शेषनाग के साथ कृष्ण लीला, कृष्ण भगवान द्वारा गोपियों के वस्त्र चोरी करने एवं महादेव के दर्शन सहित अनेक आकर्षक दृश्य एनिमेशन द्वारा प्रदर्शित किये गये थे। इस अनोखी कृष्ण लीला को देखने के लिए बडी संख्या में भक्त उमडे थे। दोपहर के बाद महाकालेश्वर मंदिर से श्रीकृष्ण भगवान की भव्य पालखी यात्रा निकाली गई थी। यह पालखी यात्रा वणाकबारा की विभिन्न शेरियों में घूमी, जहां पर बडी संख्या में भक्तों ने भगवान कृष्ण के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। कृष्ण जन्मोत्सव का आयोजन रामजी पारसमणी तथा उनके परिवार के सहयोग से किया गया था। समस्त खारवा समाज द्वारा श्री कृष्ण की पूजा-अर्चना एवं आरती करके भगवान को पालखी में स्थापित किया गया। जिसके बाद पालखी यात्रा निकाली गई।

स्वामी: मारुतिनंदन पब्लिक, संपादक, प्रकाशक व मुद्रक विजय जगदीशचंद्र भट्ट द्वारा गाला नं. 7, तिरुपति इंडस्ट्रीयल एस्टेट, सोमनाथ मंदिर रोड, दाभेल, नानी दमण - 396210 से प्रकाशित तथा असली आजादी प्रेस गाला नं. 7, तिरुपति इंडस्ट्रीयल एस्टेट, सोमनाथ मंदिर रोड, दाभेल नानी दमण - 396210 से मुद्रित।
(समाचारों के चयन के लिए संपूर्ण जिम्मेदारी पीआरबी एक्ट के अंतर्गत संपादक की होगी। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र दमण न्यायालय के अधीन होगा।)